इकाई -1 : भारत और समकालीन विश्व -2

अध्याय - 1 यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

प्रकरण (TOPIC)-1
यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय (Rise of Nationalism in Europe)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- उन्नीसवीं सदी के दौरान राष्ट्रवाद एक ऐसी ताकत बनकर उभरा जिसने यूरोप के राजनीतिक और मानसिक जगत में भारी परिवर्तन ला दिया।
- राष्ट्रवाद से अंततः यूरोप के बहु-राष्ट्रीय वंशीय साम्राज्यों के स्थान पर राष्ट्र-राज्य का उदय हुआ।
- उन्नीसवीं सदी में यूरोप में राष्ट्रवाद के प्रभाव से लोगों में सामाजिक व राजनीतिक रूप से स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा आदि के विचारों में वृद्धि हुई।

फ्रांसीसी क्रांति (French Revolution) :

- 1789 की फ्रांसीसी क्रांति यूरोप के लिए एक प्रभावशाली एवं महत्त्वपूर्ण घटना थी। क्रांति के फलस्वरूप फ्रांस में प्रमुख बदलाव हुए जिनमें संवैधानिक व्यवस्था तैयार की गई तथा कुलीन वर्ग को दी जाने वाली सुविधाओं में कटौती की गई।
- क्रांति के रास्ते से एक बड़े लक्ष्य को प्राप्त किया, जिसमें राष्ट्र की पहचान व राष्ट्र का स्वाभिमान था जिसे बाद में राष्ट्रवाद के नाम से जाना गया।
- फ्रांसीसी क्रांति के बाद एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्ति व योद्धा नेपोलियन बोनापार्टा को जाना गया। नेपोलियन ने अनेक प्रभावशाली प्रशासनिक बदलाव किए जिन्हें नागरिक संहिता 1804 के नाम से जाना गया तथा जिसे नेपोलियन संहिता के नाम से भी जाना जाता है।

यूरोप में राष्ट्रवाद का निर्माण :

- अठारहवीं शताब्दी के मध्य में यूरोप अनेक छोटी-छोटी राजशाहियों, डचिओं और कैंटनों में बँट चुका था। कहीं भी राष्ट्र का विचार नहीं था। लोग नस्ल के आधार पर समूहों में बँटे हुए थे तथा मध्य व पूर्व यूरोप में रह रहे थे।
- प्रसिद्ध ऑटोमन शासक सम्पूर्ण पूर्व व मध्य यूरोप व ग्रीस पर शासन करते थे तथा हैब्सबर्ग शासक आस्ट्रिया व हंगरी पर शासन करते थे।

रूढ़िवादिता का उदय और क्रांतियाँ :

- मध्यम वर्ग का कानून के समक्ष सभी की स्वतंत्रता व समानता में बराबरी में विश्वास था। उदारवाद कुलीन व पादरियों को दी जाने वाली विशेष सुविधाओं को समाप्त करना चाहता था।
- रूढ़िवादिता एक राजनीतिक दर्शन था जो परम्पराओं, स्थापित संस्थाओं, रीति-रिवाजों पर जोर देता है और तेज बदलावों की बजाय क्रमिक और धीरे-धीरे विकास को प्राथमिक देता है।
- 1815 के बाद वर्षों में दमन के भय से अनेक उदारवादी, राष्ट्रवादियों को भूमिगत कर दिया। बहुत सारे यूरोपीय राज्यों में क्रांतिकारियों को प्रशिक्षण देने और विचारों का प्रसार करने के लिए गुप्त संगठन उभर आए।
- इटली का एक क्रांतिकारी ज्युसेपी मेत्सिनी था जिसका जन्म 1807 में जेनोआ में हुआ था जो कार्बोनारी के गुप्त संगठन का सदस्य था। उसने दो और गुप्त संगठनों यंग इटली और यंग यूरोप बनाए थे।
- 1831 में चौबीस वर्ष की युवावस्था में मेत्सिनी को लिगुरिया में क्रांति करने के लिए बहिष्कृत कर दिया गया था। मेत्सिनी का एकीकरण में विश्वास था उसने छोटे-छोटे राज्यों को मिलाकर एकीकृत इटली का गठन किया। उसके इस मॉडल की देखा-देखी जर्मनी, फ्रांस, स्विट्जरलैण्ड और पोलैण्ड में गुप्त संगठन कायम किए गए।

इनके बारे में जानें (Know the Terms) :

- **कल्पनादर्श (Utopian vision) :** एक ऐसे समाज की कल्पना जो इतना आदर्श है कि उसका साकार होना लगभग असंभव है।
- **निरंकुशवाद (Absolution) :** ऐसी सरकार या शासन व्यवस्था जिसकी सत्ता पर किसी प्रकार का कोई अंकुश नहीं होता। इतिहास में ऐसी राजशाही सरकारों को निरंकुश सरकार कहा जाता है जो अत्यंत केन्द्रीकृत, सैन्य बल पर आधारित और दमनकारी सरकार होती थीं।
- **जनमत संग्रह (Plebiscite) :** एक प्रत्यक्ष मतदान जिसके जरिए एक क्षेत्र के सभी से एक प्रस्ताव को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए पूछा जाता है।
- **फ्रांसीसी क्रांति (French Revolution) :** 1789 की फ्रांसीसी क्रांति से जो राजनीतिक और संवैधानिक बदलाव हुए उनसे प्रभुसत्ता राजतंत्र से निकल कर फ्रांसीसी नागरिकों के समूह में हस्तांतरित हो गई। क्रांति ने घोषणा कि अब लोगों द्वारा राष्ट्र का गठन होगा और वे ही उसकी नियति तय करेंगे।
- **राष्ट्रवाद (Nationalism) :** राष्ट्र तथा समाज के प्रति एक सोच मातृभूमि के लिए प्यार व त्याग राष्ट्र की राजनीतिक पहचान में विश्वास रखना राष्ट्रवाद के प्रमुख गुण हैं।
- **राष्ट्र-राज्य (Nation-State) :** राज्य वह है जो राजनीतिक तथा भौगोलिक रूप से स्थापित है तथा प्रमुख सम्पन्न इकाई के रूप में पूर्णरूप से कार्यरत है। उन्नीसवीं सदी में यूरोप में प्रकट हुए राष्ट्रवाद के विचार की संकल्पना के विचार को समझा जा सकता है।
- **आधुनिक राज्य (Modern State) :** राज्य वह है जो किसी केन्द्रीय शक्ति द्वारा संचालित किसी विशेष भू-भाग व वहाँ निवास करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।
- **उदारवादी राष्ट्रवाद अर्थ (Liberal Nationalism Mean) :** (i) व्यक्तिगत स्वतंत्रता (ii) कानून के समक्ष समानता (iii) सहमति की सरकार (iv) बाजार की स्वतंत्रता (v) वस्तुओं व पूँजी के आवागमन पर लगे प्रतिबंधों को समाप्त किया जाए।
- **नेपोलियन संहिता (Napoleonic Code) :** 1804 की नागरिक संहिता जिसे आमतौर पर नेपोलियन की संहिता के नाम से जाना जाता है, ने जन्म पर आधारित विशेषाधिकार समाप्त कर दिए थे। उसने कानून के समक्ष बराबरी और संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित बनाया।
- **जॉलवेराइन (Zollverein) :** 1834 में प्रशा की पहल पर एक शुल्क संघ जॉलवेराइन स्थापित किया गया जिसमें अधिकांश जर्मन राज्य शामिल हो गए। इस संघ ने शुल्क अवरोधों को समाप्त कर दिया और मुद्राओं की संख्या दो कर दी जो उससे पहले तीस से ऊपर थी।
- **हैब्सबर्ग शासक (Habsburg Empire) :** आस्ट्रिया-हंगरी पर शासन करने वाला हैब्सबर्ग साम्राज्य कई अलग-अलग क्षेत्रों और जन समूहों को जोड़कर बना था। इसमें ऐल्प्स के टिरॉल, ऑस्ट्रिया और सुटेडेनलैंड जैसे इलाकों के साथ-साथ बोहेमिया भी शामिल था जहाँ के कुलीन वर्ग में जर्मन भाषा बोलने वाले ज्यादा थे।
- **ऑटोमन शासक (Ottoman Empire) :** बाल्कन क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा ऑटोमन साम्राज्य के नियंत्रण में था। बाल्कन क्षेत्र में रूमानी राष्ट्रवाद के विचारों के फैलने और ऑटोमन साम्राज्य के विघटन से स्थिति काफी विस्फोटक हो गई।
- **विचारधारा (Ideology) :** एक खास प्रकार की सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि को इंगित करने वाले विचारों का समूह।
- **रूढ़िवादिता (Conservatism) :** ऐसा राजनीतिक दर्शन जो परंपरा, स्थापित संस्थानों और रिवाजों पर जोर देता है और तेज बदलावों की बजाय क्रमिक और धीरे-धीरे विकास को प्राथमिकता देता है।
- **मताधिकार (Suffrage) :** मतदान करने का अधिकार।
- **नृजातीय (Ethnic) :** एक साझा नस्ली, जनजातीय या सांस्कृतिक उद्गम अथवा पृष्ठभूमि जिसे कोई समुदाय अपनी पहचान बताता है।

व्यक्तियों (व्यक्तित्वों) को जानें (Know the Personalities) :

- **फ्रेड्रिक सॉरयू (Frederic Sorrieu) :** सॉरयू एक फ्रांसीसी कलाकार था, जिसने 1848 में चार चित्रों की एक शृंखला बनाई। इनमें उसने सपनों का एक संसार रचा जो उसके शब्दों में "जनतांत्रिक और सामाजिक गणतंत्रों" से मिलकर बना था।
- **नेपोलियन (Napoleon 1769-1821) :** नेपोलियन एक फ्रांसिसी सैनिक व राजनेता था जिसने फ्रांसिसी क्रांति के समय प्रसिद्धि पाई उसने 1799 से 1815 तक फ्रांस पर शासन किया। नेशनल एसेंबली की पहली बैठक के बाद 1799 में सत्ता को वास्तविक रूप से स्वीकृत किया गया।
- **ज्युसेपी मेत्सिनी (Giuseppe Mazzini) :** मेत्सिनी इटली का एक क्रांतिकारी था। मेत्सिनी का जन्म 1807 में जेनोआ में हुआ था और वह कार्बोनारी के गुप्त संगठन का सदस्य था। मेत्सिनी ने दो भूमिगत संगठनों की स्थापना की जिनमें में एक मार्सेई में यंग इटली तथा दूसरा बर्न में यंग यूरोप था जिसके सदस्य पोलैंड, फ्रांस, इटली और जर्मन राज्यों में समान विचार रखने वाले युवा थे।
- **ड्यूक मैटरनिख (Duke Metternich) :** ड्यूक आस्ट्रिया का चांसलर था। वियना संधि के सम्मेलन की मेजबानी ड्यूक ने की थी।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **1797 :** नेपोलियन का इटली पर हमला: नेपोलियाई युद्धों की शुरुआत।
- **1804 :** नागरिक संहिता जिसे आमतौर पर नेपोलियन की संहिता के नाम से जाना जाता है, ने जन्म पर आधारित विशेषाधिकार समाप्त कर दिए थे। उसने कानून के समक्ष बराबरी और संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित बनाया।
- **1814-15 :** नेपोलियन का पतन; वियना शांति संधि।
- **1821 :** यूनानी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष प्रारंभ।
- **1832 :** यूनान ने स्वतंत्रता प्राप्त की।
- **1834 :** प्रशा की पहल पर एक शुल्क संघ जॉलवेराइन स्थापित किया गया जिसमें अधिकांश जर्मन राज्य शामिल हो गए। इस संघ ने शुल्क अवरोधों को समाप्त कर दिया।
- **1848 :** फ्रांस में क्रांति, आर्थिक परेशानियों से ग्रस्त कारीगरों, औद्योगिक मजदूरों और किसानों की बगावत: मध्यवर्ग संविधान और प्रतिनिध्यात्मक सरकार के गठन की माँग करता है: इतालवी, जर्मन, मैग्यार, पोलिश चेक आदि राष्ट्र राज्यों की माँग करते हैं।

प्रकरण (TOPIC)-2
क्रांतियों का युग : (1830-1848) इटली तथा जर्मनी का निर्माण
The age of Revolutions (1830-1848) and the unification of Germany and Italy

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- जैसे-जैसे रूढ़िवादी व्यवस्थाओं ने अपनी ताकत को और मजबूत बनाने की कोशिश की यूरोप के अनेक क्षेत्रों में उदारवाद और राष्ट्रवाद को क्रांति से जोड़कर देखा जाने लगा। इटली और जर्मनी के राज्य ऑटोमन साम्राज्य के सूबे, आयरलैंड और पोलैंड ऐसे ही कुछ क्षेत्र थे।
- प्रथम विद्रोह फ्रांस में जुलाई 1830 में हुआ।
- यूरोप में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की प्रगति से यूनानियों का आजादी के लिए संघर्ष 1821 में आरंभ हो गया।
- राष्ट्र के विचार में संस्कृति ने एक अहम भूमिका निभाई। कवियों और कलाकारों ने यूनान को यूरोपीय सभ्यता का पालना बताकर प्रशंसा की।
- **रूमानीवाद—** रूमानीवाद एक ऐसा सांस्कृतिक आंदोलन था जो एक खास तरह की राष्ट्रीय भावना का विकास करना चाहता था।
- **भाषा—** भाषा ने भी राष्ट्रीय भावनाओं के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 1830 का दशक यूरोप में भारी कठिनाइयाँ लेकर आया। मूल्यों में भारी वृद्धि हुई, बेरोजगारी बढ़ी, खेती में पैदावार की कमी आई। ज्यादातर देशों में नौकरी ढूँढ़ने वालों की तादाद उपलब्ध रोजगार से अधिक थी। किसान व पढ़ा-लिखा मध्यम वर्ग इनसे ग्रसित था।
- 1848 में बड़ी संख्या में राजनीतिक संगठन फ्रैंकफर्ट शहर में एकत्रित हुए और सभी ने ऑल जर्मन एसेंबली को मत देने का निर्णय किया।
- उदारवादी आंदोलन के अंदर महिलाओं को राजनीतिक अधिकार प्रदान करने का मुद्दा विवादास्पद था।
- हालांकि रूढ़िवादी ताकतें 1848 में उदारवादी आंदोलनों को दबा पाने में कामयाब हुई किंतु वे पुरानी व्यवस्था बहाल नहीं कर पाईं।
- 1848 के बाद यूरोप में राष्ट्रवाद का जनतंत्र और क्रांति से अलगाव होने लगा।
- रूढ़िवादियों ने अक्सर राष्ट्रवादी भावनाओं का इस्तेमाल किया।
- जर्मनी और इटली एकीकृत होकर राष्ट्र-राज्य बने।
- जर्मनी की तरह इटली में भी विखंडन का एक लम्बा इतिहास था।
- 1848 में जर्मनी महासंघ के विभिन्न इलाकों को जोड़कर एक निर्वाचित संसद द्वारा शासित राष्ट्र-राज्य बनाने का प्रयास किया था।

परिस्थितियों (शर्तों) के विषय में जानें (समझें) (Know the Terms) :

- **भावनात्मक विचार (Romanticism) :** एक सांस्कृतिक आंदोलन जो विज्ञान व अन्य कारणों को अस्वीकार करता है तथा हृदय व भावनाओं से परिचय कराता है। भावनात्मक विचारों का जुड़ाव एक ऐसे सामूहिक विचार पैदा करने से था जो हमें उत्तराधिकार में मिले हुए थे तथा उनसे एक ऐसी सार्वजनिक संस्कृति का विकास करना था जो राष्ट्रवाद के हित में हो।
- **क्रांतिकारी (Revolutionaries) :** उन्नीसवीं सदी में उदारवादी विचारों के समर्थक तथा राजशाही शासन के विरोधी क्रांतिकारी थे।
- **नारी आंदोलन (Feminism) :** महिलाओं के राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक आधारित अधिकारों व हितों की रक्षा के लिए जागरूकता व आंदोलन नारीवाद या नारी आंदोलन था।
- **फ्रैंकफर्ट पार्लियामेंट (Frankfurt Parliament) :** जर्मन इलाकों में बड़ी संख्या में राजनीतिक संगठनों ने फ्रैंकफर्ट शहर में मिलकर एक सर्व-जर्मन नेशनल एसेंबली के पक्ष में मतदान का फैसला लिया। 18 मई, 1848 को 831 निर्वाचित प्रतिनिधियों ने एक सजे-धजे जुलूस में जाकर फ्रैंकफर्ट संसद में अपना स्थान ग्रहण किया। यह संसद सेंट पॉल चर्च में आयोजित हुई। उन्होंने एक जर्मन राष्ट्र के लिए एक ऐसे संविधान का प्रारूप तैयार किया जो राजशाही पर आधारित था।
- **राष्ट्रवादी सोच, 1830 (Nationalistic Feeling, 1830) :** राष्ट्रवाद का विकास केवल युद्धों और क्षेत्रीय विस्तार से नहीं हुआ। राष्ट्र के विचार के निर्माण में संस्कृति ने एक अहम भूमिका निभाई। कला, काव्य, कहानियों, किस्सों और संगीत ने राष्ट्रवादी भावनाओं को गढ़ने और व्यक्त करने में सहयोग दिया।

व्यक्तियों (व्यक्तित्वों) के विषय में जाने (Know the Personalities) :

1. **लुइजे ऑटो-पीटर्स (Louise Otto-Peters) :** लुइजे एक राजनैतिक कार्यकर्ता थी जिसने महिलाओं की पत्रिका और तत्पश्चात एक नारीवादी संगठन की स्थापना की।
2. **कार्ल वैल्कर (Carl Welcker) :** कार्ल वैल्कर फ्रैंकफर्ट संसद के एक निर्वाचित सदस्य थे। जिन्होंने महिलाओं के बराबर के अधिकार का विरोध किया। उनका मानना था कि यह कार्य प्रकृति के विरुद्ध होगा।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **1830 :** प्रथम विद्रोह फ्रांस में जुलाई 1830 में हुआ।
- **1830 :** 1830 का दशक यूरोप में भारी कठिनाइयाँ लेकर आया।
- **1848 :** जर्मन इलाकों में बड़ी संख्या में राजनीतिक संगठनों ने फ्रैंकफर्ट शहर में मिलकर एक सर्व-जर्मन एसेंबली के पक्ष में मतदान किया।

प्रकरण (TOPIC)-3

राष्ट्र-राज्य–इटली तथा जर्मनी का निर्माण
Nation-States–Unification of Italy And Germay

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- 1848 के बाद यूरोप में राष्ट्रवाद का जनतंत्र और क्रांति से अलगाव होने लगा। इसे उस प्रक्रिया में देखा जा सकता है जिससे जर्मनी और इटली एकीकृत होकर राष्ट्र-राज्य बने।
- 1848 में जर्मन के मध्यवर्गीय लोगों, जिनमें वाणिज्यिक, व्यापारी, कलाकार, धनी आदि, में राष्ट्रवादी भावनाएँ व्याप्त थीं। वे सभी 1848 में जर्मन महासंघ के विभिन्न इलाकों को जोड़कर एक निर्वाचित संसद द्वारा शासित राष्ट्र-राज्य बनाने का प्रयास किया था। निर्वाचित प्रतिनिधियों ने एक सजे-धजे जुलूस में जाकर फ्रैंकफर्ट संसद में अपना स्थान ग्रहण किया। यह संसद सेंट पॉल चर्च में आयोजित हुई। जब प्रतिनिधियों ने प्रशा के राजा फ्रेडरिक विल्हेम चतुर्थ को ताज पहनाने की कोशिश की तो उसने उसे अस्वीकार कर उन राजाओं का साथ दिया जो निर्वाचित सभा के विरोधी थे।
- फ्रैंकफर्ट संसद के बाद प्रशा जर्मन एकीकरण का नेता बना। उसके पश्चात प्रशा ने राष्ट्रीय एकीकरण के आंदोलन का नेतृत्व संभाल लिया। उसका प्रमुख मंत्री, ऑटो वॉन बिस्मार्क इस प्रक्रिया का जनक था जिसने प्रशा की सेना और नौकरशाही की मदद ली। सात वर्ष के दौरान ऑस्ट्रिया,

डेनमार्क और फ्रांस से तीन युद्धों में प्रशा की जीत हुई और एकीकरण की प्रक्रिया पूरी हुई।

- जनवरी, 1871 में, वर्साय में हुए एक समारोह में प्रशा के राजा विलियम प्रथम को जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया। जर्मन राज्यों के राजकुमारों, सेना प्रतिनिधियों और प्रमुख मंत्री ऑटो वान बिस्मार्क समेत प्रशा के महत्त्वपूर्ण मंत्रियों की एक बैठक वर्साय के महल के एक बेहद ठंडे शीशमहल (हॉल ऑफ मिरर्स) में हुई। नए राज्य में जर्मनी की मुद्रा, बैंकिंग और कानूनी तथा न्यायिक व्यवस्थाओं के आधुनिकीकरण पर काफी जोर दिया।
- उन्नीसवीं सदी के मध्य में इटली सात राज्यों में बँटा हुआ था। उत्तरी भाग ऑस्ट्रियाई हैब्सबर्गों के अधीन था, मध्य इलाकों पर पोप का शासन था और दक्षिणी क्षेत्र स्पेन के बूर्बो राजाओं के अधीन थे। केवल एक सार्डिनिया पीडमॉण्ट में इतालवी राजघराने का शासन था।
- मेत्सिनी रिपब्लिकन पार्टी का नेता था। उसने अपने उद्देश्यों के प्रसार के लिए यंग इटली नामक एक गुप्त संगठन भी बनाया था। 1831 और 1848 में क्रांतिकारी विद्रोहों की असफलता से युद्ध के जरिये इतालवी राज्यों को जोड़ने की जिम्मेदारी सार्डिनिया-पीडमॉण्ड के शासक विक्टर इमेनुएल द्वितीय पर आ गई। मंत्री प्रमुख कावूर जिसने इटली के प्रदेशों को एकीकृत करने वाले आंदोलन का नेतृत्व किया ने फ्रांस से सार्डिनिया-पीडमाण्ट की एक चतुर कूटनीतिक संधि की जिससे सार्डिनिया-पीडमाण्ट 1859 में आस्ट्रियाई बलों को हरा पाने में कामयाब हुआ।
- ज्युसेपे गैरीबॉल्डी ने इटली के एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। नियमित सैनिकों के अलावा ज्युसेपे गैरीबॉल्डी के नेतृत्व में भारी संख्या में सशस्त्र स्वयंसेवकों ने भाग लिया। 1860 में वे दक्षिणी इटली और दो सिसिलियों के राज्य में प्रवेश कर गए और स्पेनी शासकों को हटाने के लिए स्थानीय किसानों का समर्थन पाने में सफल रहे। 1861 में इमेनुएल द्वितीय को एकीकृत इटली का राजा घोषित किया गया।
- ब्रिटेन का राष्ट्र-राज्य बनने का इतिहास एकदम अलग है, ब्रिटेन बिना किसी विद्रोह और क्रांति के राष्ट्र-राज्य के रूप में संगठित हुआ। अठारहवीं सदी के पहले ब्रितानी राष्ट्र था ही नहीं। ब्रितानी द्वीप समूह में रहने वाले लोगों— अंग्रेज़, वेल्श, स्कॉट या आयरिश की मुख्य पहचान नृजातीय थी। जैसे-जैसे आंग्ल राष्ट्र की धन-दौलत, अहमियत और सत्ता में वृद्धि हुई वह द्वीप समूह के अन्य राष्ट्रों पर अपना प्रभुत्व बढ़ाने में सफल हुआ।
- एक लंबे टकराव और संघर्ष के बाद आंग्ल संसद ने 1688 में राजतंत्र से ताकत छीन ली थी। इस संसद के माध्यम से एक राष्ट्र-राज्य का निर्माण हुआ जिसके केन्द्र में इंग्लैण्ड था। इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड के बीच ऐक्ट ऑफ यूनियन (1707) से "यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन" का गठन हुआ।
- एक ब्रितानी पहचान के विकास का अर्थ यह हुआ कि स्कॉटलैण्ड की खास संस्कृति और राजनीतिक संस्थानों को योजनाबद्ध तरीके से दबाया गया। ब्रितानियों द्वारा आयरलैण्ड को अपने नियंत्रण में कर लिया। आयरलैण्ड कैथलिक और प्रोटेस्टेंट धार्मिक गुटों में गहराई से बँटा हुआ था। अंग्रेज़ों ने आयरलैण्ड में प्रोटेस्टेंट धर्म मानने वालों को बहुसंख्यक कैथलिक देश पर प्रभुत्व बढ़ाने में सहायता की।
- 1801 में आयरलैण्ड को बलपूर्वक यूनाइटेड किंगडम में शामिल कर लिया गया। ब्रितानी प्रभाव के विरुद्ध हुए कैथलिक विद्रोहों को निर्ममता से कुचल दिया गया। नए ब्रिटेन के प्रतीक चिह्नों, ब्रितानी झंडा (यूनियन जैक) और राष्ट्रीय गान (गॉड सेव अवर नोबल किंग) को खूब बढ़ावा दिया गया और पुराने राष्ट्र इस संघ में मातहत सहयोगी के रूप में ही रह पाए।

व्यक्तियों (व्यक्तित्वों) को जानें (Know the Personalities) :

1. **ऑटो वॉन बिस्मार्क (Otto Von Bismarck) :** ऑटो वॉन बिस्मार्क प्रशा का मंत्री प्रमुख था जिसने जर्मनी के एकीकरण में प्रमुख भूमिका निभाई। ऑटो वॉन बिस्मार्क इस प्रक्रिया का जनक था जिसने प्रशा की सेना और नौकरशाही की मदद ली।
2. **काइजर विलियम (Kaiser William) : 18** जनवरी, **1871** को जर्मन राज्यों के राजकुमारों, सेना के प्रतिनिधियों और प्रमुख मंत्री ऑटो वॉन बिस्मार्क समेत प्रशा के महत्त्वपूर्ण मंत्रियों की एक बैठक वर्साय के शीशमहल (हॉल ऑफ मिरर्स) में हुई। सभा ने प्रशा में काइजर विलियम प्रथम के नेतृत्व में नए जर्मन साम्राज्य की घोषणा की। नए राज्य ने जर्मनी की मुद्रा, बैंकिंग और कानूनी तथा न्यायिक व्यवस्थाओं के आधुनिकीकरण पर जोर दिया।
3. **काउंट कैमिलो डी कावूर (Count Camillo de Cavour) :** काउंट कैमिलो दे कावूर पीडमॉण्ड का प्रमुख मंत्री था, फ्रांस के साथ संधि करके राजा की सरकार का गठन कराया। सार्डिनिया, पीडमॉण्ट **1859** में आस्ट्रियाई बलों को हरा पाने में कामयाब हुआ।
4. **ज्युसेपे गैरीबॉल्डी (Giuseppe Garibaldi) :** ज्युसेपे गैरीबॉल्डी ने इटली के एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। रैड-शर्ट कहलाये जाने वाले स्वयंसेवकों के साथ गैरीबॉल्डी ने युद्ध में प्रवेश किया। **1860** में वे दक्षिण इटली और दो सिसिलियों के राज्य में प्रवेश कर गए और निजी शासकों को हटाने के लिए स्थानीय किसानों का समर्थन पाने में सफल रहे।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **1855 :** सार्डिनिया राज्य ने ब्रिटिश और फ्रांस की ओर से जर्मन युद्ध में भाग लिया।
- **1858 :** कावूर ने फ्रांस के साथ मिलकर गठबंधन बनाया।
- **1859-1870 :** इटली का एकीकरण।
- **1859 :** सार्डिनिया-पीडमॉण्ट ने फ्रांस के साथ मिलकर गठबंधन बनाया तथा ऑस्ट्रियाई सेनाओं को पराजित किया। बहुत बड़ी संख्या में ज्युसेपे गैरीबॉल्डी के नेतृत्व में आंदोलन में भाग लिया।
- **1860 :** सार्डिनिया-पीडमॉण्ट की सेनाएँ दक्षिण इटली और दो सिसिलियों के राज्य में प्रवेश कर गईं और स्पेनी शासकों को हटाने में सफल रही।
- **1861 :** इमेनुएल द्वितीय को एकीकृत इटली का राजा घोषित किया गया तथा रोम को इटली की राजधानी घोषित किया गया।
- **1866-1871 :** जर्मनी का एकीकरण।
- **1871 :** प्रशा के राजा विलियम प्रथम को जर्मन का शासक घोषित किया गया।
- **1905 :** हैब्सबर्ग और ऑटोमन साम्राज्यों में स्लाव राष्ट्रवाद का मजबूत होना।
- **1914 :** प्रथम विश्वयुद्ध प्रारंभ।

प्रकरण (TOPIC)-4
राष्ट्र की दृश्य कल्पना : राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद
Visualising the Nation : Nationalism and Imperialism

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

राष्ट्र की दृश्य कल्पना (Visualising the Nation) :

- किसी दृश्य चिह्न के रूप में किसी को अभिव्यक्त किया जा सकता है। इसकी अभिव्यक्ति के लिए कोई उद्देश्य, तस्वीर, लिखित शब्द ध्वनि और किसी विशेष चिह्न का उपयोग किया जा सकता है।
- अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में कलाकारों ने राष्ट्र का मानवीकरण करके इस प्रश्न को हल किया। उन्होंने एक देश को यूँ चित्रित किया जैसे वह कोई व्यक्ति हो। कलाकारों ने ऐसे चिह्नों का उपयोग किया जो दैनिक जीवन में उपयोग किए जाते थे तथा जिनकी पहचान अशिक्षित लोग भी आसानी से कर सकते थे। क्रांतियों के समय कलाकारों ने राष्ट्र को एक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। देश का चित्रण इस प्रकार से किया गया जैसे वह कोई व्यक्ति हो।
- स्वतंत्रता अथवा उदारता को जिन चिह्नों जैसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया या दृष्टांत (कहानी) के रूप में बताया गया वे सभी अव्यावहारिक थे। दृष्टांत सही और भावुक अर्थ था। उन्नीसवीं सदी में फ्रांसीसी कलाकारों ने गणतंत्र जैसे विचारों को व्यक्त करने के लिए नारी रूपक का प्रयोग किया। फ्रांस में उसे लोकप्रिय ईसाई नाम मारीआन दिया गया जिसने जन-राष्ट्र के विचार को रेखांकित किया।
- इसी प्रकार जर्मेनिया, जर्मन राष्ट्र का प्रतीक बन गई। एक टूटी हुई जंजीर क्रांति का प्रतीक बन गई।
- मारीआन के चिह्न भी स्वतंत्रता और गणतंत्र के थे— लाल टोपी, तिरंगा और कलगी। मारीआन की प्रतिमाएँ सार्वजानिक चौकों पर लगाई गईं ताकि जनता को राष्ट्रीय प्रतीक की याद आती रहे।

राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद (Nationalism and Imperialism) :

- अठारहवीं सदी के अन्त व उन्नीसवीं सदी के मध्य तक यूरोप में भारी अव्यवस्था व कोलाहल का माहौल था। 1871 के बाद यूरोप में राष्ट्रवाद व साम्राज्यवाद में बदलाव का माहौल पैदा हुआ।
- यूरोप में राष्ट्रवादी समूह एक-दूसरे के विपक्षी लगातार बढ़ते जा रहे थे परिणामत: एक-दूसरे के साथ संघर्ष बढ़ रहा था। मुख्य रूप से इस संघर्ष में आधुनिक रोमानिया, बुल्गेरिया, अल्बेनिया, यूनान, मेसिडोनिया, क्रोएशिया, बोस्निया, हर्ज़ेगोविना, स्लोवेनिया, सर्बिया और मॉन्टिनिग्रो शामिल थे जो यूरोप में राष्ट्रवाद का लाभ पाना चाहते थे।
- बाल्कन क्षेत्र में बड़ी शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा होने लगी। इस समय यूरोपीय शक्तियों के बीच व्यापार और उपनिवेशों के साथ नौसैनिक और सैन्य ताकत के लिए गहरी प्रतिस्पर्धा थी। जिस तरह बाल्कन समस्या आगे बढ़ी उसमें यह प्रतिस्पर्धा खुलकर सामने आई। रूस, जर्मनी, इंग्लैण्ड, ऑस्ट्रो-हंगरी की हर ताकत बाल्कन पर अन्य शक्तियों की ताकत की पकड़ को कमजोर करके क्षेत्र में प्रभाव को बढ़ाना चाहती थी।

निम्न के बारे में जानें (Know the Terms) :

- **नृजातीय (Ethnic) :** एक साझा नस्ली, जनजातीय या सांस्कृतिक उद्गम अथवा पृष्ठभूमि जिसे कोई समुदाय अपनी पहचान मानता है।
- **पहचान चिह्न (Symbol) :** पहचान चिह्न एक ऐसा रूपक है जो किसी की अलग से पहचान प्रस्तुत (इंगित) करता है। यह किसी उद्देश्य, तस्वीर, लिखित शब्द, ध्वनि या विशेष चिह्न के द्वारा प्रस्तुत (इंगित) किया जाता है।
- **साम्राज्यवाद (Imperialism) :** साम्राज्यवाद एक ऐसी स्थिति है जिसमें कोई शासक अपने देश की सीमाओं को आगे बढ़ाकर अन्य देशों में अपना आधिपत्य स्थापित कर वहाँ अपने उपनिवेश बनाते हैं तथा उन देशों पर अपनी नीतियाँ लागू कर अपना शासन स्थापित करते हैं तथा इन देशों की सीमाओं का अधिग्रहण करते हैं।
- **दृष्टांत (रूपक) (Allegory) :** जब किसी अमूर्त विचार (जैसे– लालच, ईर्ष्या, स्वतंत्रता, मुक्ति) को किसी व्यक्ति या किसी चीज के जरिए इंगित किया जाता है। एक रूपकात्मक कहानी के दो अर्थ होते हैं– एक शाब्दिक और एक प्रतीकात्मक।

व्यक्तियों (व्यक्तित्वों) को जानें (Know the Personalities) :

1. **मारिआन एवं जर्मेनिया (Marianne and Germania) :** जैसे ही भारत में राष्ट्र के विषय में कोई दृष्टांत दिया जाता है, तो हमारे मस्तिष्क में भारत माता की छवि एक महिला के चित्र के रूप में इंगित (प्रकट) हो जाती है। ऐसे ही मारिआन फ्रांस के लिए तथा जर्मेनिया की छवि जर्मनी के लिए इंगित (प्रकट) हो जाती है। फ्रांस व जर्मनी में रहने वाले लोगों के हृदय और मस्तिष्क में मारिआन व जर्मेनिया की छवि एक राष्ट्र की माता के रूप में प्रकट होती है तथा वे उसका सम्मान करते है व पूज्य भाव से देखते हैं। मारिआन के चिह्न स्वतंत्रता और गणतंत्र के थे– लाल टोपी, तिरंगा और कलगी। मारिआन की प्रतिमाएँ सार्वजनिक चौकों पर लगाई गईं ताकि जनता को एकता के राष्ट्रीय प्रतीक की याद आती रहे और लोग उससे तादात्म्य स्थापित कर सकें। मारिआन की छवि सिक्कों और डाक टिकटों पर अंकित की गई। चाक्षुष अभिव्यक्तियों में जर्मेनिया बलूत वृक्ष के पत्तों का मुकुट पहनती है क्योंकि जर्मन बलूत वीरता का प्रतीक है।

महत्वपूर्ण चिन्ह (प्रतीक) (Know the Symbols) :

1. टूटी जंजीर (बेड़ियाँ) – आज़ादी मिलना
2. बाज-छाप कवच – जर्मन साम्राज्य की प्रतीक शक्ति
3. बलूत पत्तियों का मुकुट – बहादुरी
4. तलवार – मुकाबले की तैयारी
5. तलवार पर लिपटी जैतून की डाली – शांति की चाह
6. काला, लाल और सुनहरा तिरंगा – 1848 में उदारवादियों-राष्ट्रवादियों का झंडा जिसे जर्मन राज्यों के ड्यूक्स ने प्रतिबंधित किया।
7. उगते सूर्य की किरण – एक नए युग का सूत्रपात

❑❑

इकाई – II : समकालीन भारत–2

अध्याय – 1 संसाधन एवं विकास

प्रकरण (TOPIC)-1
संसाधन-प्राकृतिक और मानवीय
(Resource Natural and Artificial)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- हमारे पर्यावरण में उपलब्ध प्रत्येक वस्तु जो हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रयुक्त की जा सकती है और जिसको बनाने के लिए प्रौद्योगिकी उपलब्ध है, जो आर्थिक रूप से संभाव्य और सांस्कृतिक रूप से मान्य है, एक "संसाधन" है।

- संसाधनों का निम्न रूप से वर्गीकरण किया जा सकता है–
  (a) उत्पत्ति के आधार पर–
  (i) जैव (ii) अजैव
  (b) समाप्यता के आधार पर–
  (i) नवीकरण योग्य (ii) अनवीकरण योग्य
  (c) स्वामित्व के आधार पर–
  (i) व्यक्तिगत (ii) सामुदायिक (iii) राष्ट्रीय (iv) अंतर्राष्ट्रीय
  (d) विकास के स्तर के आधार पर–
  (i) संभावी (ii) विकसित (iii) भंडार (iv) संचित कोष
- संसाधन जिस प्रकार, मनुष्य के जीवन यापन के लिए अति आवश्यक है, उसी प्रकार जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए भी महत्त्वपूर्ण है।
- संसाधनों के अंधाधुंध शोषण से वैश्विक पारिस्थितिकी संकट पैदा हो गया है जैसे भूमंडलीय तापन, ओजोन परत अवक्षय, पर्यावरण प्रदूषण और भूमि निम्नीकरण आदि हैं।
- **संसाधनों का विकास**–संसाधन मनुष्य के जीवन यापन के लिए आवश्यक हैं। ऐसा विश्वास किया जाता था कि संसाधन प्रकृति की देन है। परिणामस्वरूप, मानव ने इनका अंधाधुंध उपयोग किया है, जिससे निम्नलिखित मुख्य समस्याएँ पैदा हो गई हैं–
  (i) संसाधनों का ह्रास।
  (ii) संसाधन समाज के कुछ ही लोगों के हाथ में आ गए।
  (iii) अंधाधुंध शोषण से पारिस्थितिकी संकट पैदा हो गया।
- मानव जीवन की गुणवत्ता और विश्व शांति बनाए रखने के लिए संसाधनों का न्यायसंगत बँटवारा आवश्यक है।
- सतत् पोषणीय आर्थिक विकास का अर्थ है कि विकास पर्यावरण को बिना नुकसान पहुँचाए और वर्तमान विकास की प्रक्रिया भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकता की अवहेलना न करें।

  रियो डी जेनेरो पृथ्वी सम्मेलन, 1992–जून, 1992 में 100 से भी अधिक राष्ट्राध्यक्ष ब्राजील के शहर रियो डी जेनेरो में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी सम्मेलन में एकत्रित हुए। सम्मेलन का आयोजन विश्व स्तर पर उभरते पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक आर्थिक विकास की समस्याओं का हल ढूँढ़ने के लिए किया गया था। इस सम्मेलन में एकत्रित नेताओं ने भूमंडलीय जलवायु परिवर्तन और जैविक विविधता पर एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। रियो सम्मेलन में भूमंडलीय वन सिद्धांतों पर सहमति जताई और 21वीं शताब्दी में सतत् पोषणीय विकास के लिए एजेंडा 21 को स्वीकृति प्रदान की।

  एजेंडा-21–यह एक घोषणा है जिसे 1992 में ब्राजील के शहर रियो डी जेनेरो में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (UNCED) के तत्वावधान में राष्ट्राध्यक्षों द्वारा स्वीकृत किया गया था। इसका उद्देश्य भूमंडलीय सतत् पोषणीय विकास हासिल करना है। यह एक कार्यसूची है जिसका उद्देश्य समान हितों, पारस्परिक आवश्यकताओं एवं सम्मिलित जिम्मेदारियों के अनुसार विश्व सहयोग के द्वारा पर्यावरणीय क्षति, गरीबी और रोगों से निपटना है। एजेंडा-21 का मुख्य उद्देश्य यह है कि प्रत्येक स्थानीय निकाय अपना स्थानीय एजेंडा-21 तैयार करे।
- **भारत में संसाधन नियोजन**–संसाधन नियोजन में निम्नलिखित सोपान हैं–
  (i) देश के विभिन्न प्रदेशों में संसाधनों की पहचान कर उनकी सूची तैयार करना। इस कार्य में क्षेत्रीय सर्वेक्षण, मानचित्र बनाना और संसाधनों का गुणात्मक एवं मात्रात्मक अनुमान लगाना व मापन करना।
  (ii) संसाधन विकास योजनाएँ लागू करने के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी कौशल और संस्थागत नियोजन ढाँचा तैयार करना।
  (iii) संसाधन विकास योजनाओं और राष्ट्रीय विकास योजना में समन्वय स्थापित करना।
- भारत में 43% मैदानी क्षेत्र, 30% पर्वतीय क्षेत्र तथा 27% पठारी क्षेत्र है।
- भू-संसाधन का निम्नलिखित के रूप में प्रयोग किया जाता है–
  (i) वन
  (ii) कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि
  (a) बंजर तथा कृषि अयोग्य भूमि
  (b) गैर कृषि प्रयोजनों में लगाई भूमि-इमारतें, सड़क

(iii) परती भूमि के अतिरिक्त अन्य कृषि अयोग्य भूमि

(a) स्थायी चरागाहें

(b) विविध वृक्षों, वृक्ष फसलों तथा उपवनों के अधीन भूमि

(c) कृषि योग्य बंजर भूमि

(iv) परती भूमि

(a) वर्तमान परती

(b) वर्तमान के अतिरिक्त अन्य परती

(v) शुद्ध (निवल) बोया गया क्षेत्र।

- भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किमी. है। परंतु इसके 93 प्रतिशत भाग के ही उपयोग के आँकड़े उपलब्ध हैं।
- वर्तमान समय में भारत में लगभग 13 करोड़ हेक्टेयर भूमि निम्नीकृत है। इसमें से लगभग 28 प्रतिशत भूमि निम्नीकृत वनों के अंतर्गत है, 56 प्रतिशत क्षेत्र अपरदित है और शेष लवणीय और क्षारीय है।
- **भूमि निम्नीकरण के कारण—**

(i) वनोन्मूलन

(ii) अति पशुचारण

(iii) खनन एवं पत्थर निकासी

(iv) अति की कृषि से भूमि लवणीय व क्षारीय हो जाती है।

(v) सीमेंट उद्योग से भूमि धूल बढ़ जाती है।

- **भूमि संरक्षण के उपाय—**

(i) वनारोपण

(ii) चरागाहों का उचित प्रबंधन।

(iii) पेड़ों की रक्षक मेखला।

(iv) रेतीले टीलों को काँटेदार झाड़ियाँ लगाकर।

(v) बंजर भूमि का उचित प्रबंधन।

(vi) खनन नियंत्रण।

(vii) औद्योगिक जल को परिष्करण के पश्चात विसर्जित करके।

इन्हें भी जानें (Know the Terms) :

- **संसाधन (Resources) :** पर्यावरण में उपलब्ध प्रत्येक वस्तु जो हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रयुक्त की जा सकती है उसे संसाधन कहते हैं।
- **जैविक संसाधन (Biotic Resources) :** इन संसाधनों की प्राप्ति जीवमंडल से होती है और इनमें जीवन व्याप्त है; जैसे—मनुष्य, वनस्पति जगत, प्राणिजात, मत्स्य जीवन, पशुधन आदि।
- **अजैव संसाधन (Abiotic Resources) :** वे सारे संसाधन जो निर्जीव वस्तुओं से बने हैं, अजैव संसाधन कहलाते हैं; जैसे—चट्टानें और धातुएँ।
- **नवीकरण योग्य संसाधन (Renewable Resources) :** वे संसाधन जिन्हें भौतिक, रासायनिक या यांत्रिक प्रक्रियाओं द्वारा नवीकृत या पुन: उत्पन्न किया जा सकता है, उन्हें नवीकरण योग्य अथवा पुन: पूर्ति संसाधन कहा जाता है। जैसे—सौर तथा पवन ऊर्जा, जल, वन व वन्य जीव।
- **अनवीकरण योग्य संसाधन (Non-renewable Resources) :** इन संसाधनों का विकास एक लंबे भू-वैज्ञानिक अंतराल में होता है। खनिज और जीवाश्म ईंधन इसके उदाहरण हैं।
- **प्राकृतिक संसाधन (Natural Resources) :** प्राकृतिक संसाधन हमें भूमि, जल, वन और खनिजों के रूप में प्राप्त हैं।
- **मानवीय संसाधन (Man-Made Resources) :** वे संसाधन जिन्हें मनुष्य द्वारा मशीनों की सहायता से तैयार किया जाता है।
- **व्यक्तिगत संसाधन (Individual Resources) :** वे संसाधन जो निजी स्वामित्व में होते हैं, व्यक्तिगत संसाधन कहलाते हैं। जैसे—किसान

की भूमि, बाग, चरागाह आदि निजी संसाधन हैं।

- **सामुदायिक स्वामित्व वाले संसाधन (Community owned Resources) :** ये संसाधन समुदाय के सभी सदस्यों को उपलब्ध होते है। जैसे— गाँव की शामिलात भूमि (चारण भूमि, तालाब, शमशान आदि)।
- **राष्ट्रीय संसाधन (National Resources) :** तकनीकी तौर पर पाए जाने वाले सारे संसाधन राष्ट्रीय हैं। सारे खनिज पदार्थ, जल संसाधन, वन, वन्यजीव, राजनीतिक सीमाओं की सारी भूमि राष्ट्रीय संसाधन हैं।
- **अंतर्राष्ट्रीय संसाधन (International Resources) :** वे संसाधन जो किसी भी राष्ट्र के निजी नहीं होते हैं, अंतर्राष्ट्रीय संसाधन कहलाते हैं।
- **संभावी संसाधन (Potential Resources) :** वे संसाधन जो किसी प्रदेश में विद्यमान होते हैं, परंतु इनका उपयोग नहीं किया गया है।
- **विकसित संसाधन (Developed Resources) :** वे संसाधन जिनका सर्वेक्षण किया जा चुका है और उनके उपयोग की गुणवत्ता और मात्रा निर्धारित की जा चुकी है, विकसित संसाधन कहलाते हैं।
- **भंडार (Stock) :** पर्यावरण में उपलब्ध वे पदार्थ जो मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं, परंतु उपयुक्त प्रौद्यागिकी के अभाव में उनकी पहुँच से बाहर हैं, भंडार में शामिल हैं।
- **संचित (Reserve) :** यह संसाधन भंडार का ही हिस्सा है, जिन्हें उपलब्ध तकनीकी ज्ञान की सहायता से प्रयोग में लाया जा सकता है, परंतु इनका उपयोग अभी आरंभ नहीं हुआ है।
- **संसाधनों का विकास (Sustainable development) :** संसाधन जिस प्रकार, मनुष्य के जीवनयापन के लिए अति आवश्यक हैं, उसी प्रकार जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसा विश्वास किया जाता था कि संसाधन प्रकृति की देन हैं।
- **संसाधन नियोजन (Resource Planning) :** संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए नियोजन एक सर्वमान्य रणनीति है।
- **संसाधनों का संरक्षण (Resources Conservation) :** संसाधन किसी भी तरह के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परंतु संसाधनों का विवेकहीन उपयोग और अति उपयोग के कारण कई सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।
- **कुल कृषि क्षेत्र (Gross Cropped area) :** एक कृषि वर्ष में एक बार से अधिक बोए गए क्षेत्र को शुद्ध (निवल) बोए गए क्षेत्र में जोड़ दिया जाए तो वह सकल कृषित क्षेत्र कहलाता है।
- **परती भूमि (Fallow Land) :** जहाँ एक कृषि वर्ष या उससे कम समय से खेती न की गई हो।
- **बेकार भूमि (Waste Land) :** ऐसी भूमि जो कृषि योग्य नहीं है, उसे बेकार भूमि कहते हैं।
- **कुल बोया क्षेत्र (Net Sown area) :** एक वर्ष में कुल बोया गया क्षेत्र।
- **चरागाह (Pasture) :** घासयुक्त भूमि जो जानवरों को उनका भोजन उपलब्ध कराती है उसे चरागाह भी कहते हैं।

प्रकरण (TOPIC)–2

भूमि एक संसाधन के रूप में (Land As a Resource)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- मिट्टी अथवा मृदा सबसे महत्त्वपूर्ण नवीकरण योग्य प्राकृतिक संसाधन है। यह पौधों के विकास का माध्यम है जो पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के जीवों का पोषण करती है।
- मृदा बनने की प्रक्रिया में उच्चावच, जनक शैल अथवा संस्तर शैल, जलवायु, वनस्पति और अन्य जैव पदार्थ और समय मुख्य कारक हैं।
- मृदा जैव (ह्यूमस) और अजैव दोनों प्रकार के पदार्थों से बनती है।
- मृदा बनने की प्रक्रिया को निर्धारित करने वाले तत्वों, उनके रंग, गहराई, गठन, आयु व रासायनिक और भौतिक गुणों के आधार पर भारत की मृदाओं को विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है।
- भारत में अनेक प्रकार के उच्चावच, भू-आकृतियाँ, जलवायु और वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। इस कारण अनेक प्रकार की मृदाएँ विकसित हुई हैं।

(i) जलोढ़ मृदा (Alluvial Soil)—

(a) यह मृदा विस्तृत रूप से फैली हुई है और यह देश की महत्त्वपूर्ण मृदा है। वास्तव में संपूर्ण उत्तरी मैदान जलोढ़ मृदा से बना है।

(b) आयु के आधार पर जलोढ़ मृदाएँ दो प्रकार की हैं—पुराना जलोढ़ (बांगर), और नया जलोढ़ (खादर) है।

(c) अधिकतर जलोढ़ मृदाएँ पोटाश, फास्फोरस और चूनायुक्त होती हैं।

(d) गन्ना, चावल, गेहूँ और अन्य अनाजों और दलहन फसलों के लिए जलोढ़ मृदा उपयुक्त होती है।

(ii) काली मृदा (Black Soil)—

(a) इन्हें "रेगर" मृदाएँ भी कहा जाता है। इन मृदाओं का रंग काला होता है।

(b) काली मृदा कपास की खेती के लिए उचित मानी जाती है।

(c) काली मृदाएँ महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, मालवा, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पठार पर पाई जाती हैं।

(d) काली मृदाएँ कैल्शियम कार्बोनेट, मैग्नीशियम, पोटाश और चूने जैसे पौष्टिक तत्त्वों से परिपूर्ण होती हैं। परंतु इनमें फास्फोरस की मात्रा कम होती है। काली मृदा बहुत महीन कणों अर्थात् मृत्तिका से बनी है। इसकी नमी धारण करने की क्षमता बहुत होती है।

(iii) लाल और पीली मृदा (Red and Yellow Soil)—

(a) लाल मृदा दक्कन पठार के पूर्वी और दक्षिणी हिस्सों में रवेदार आग्नेय चट्टानों पर कम वर्षा वाले भागों में विकसित हुई है।

(b) लाल और पीली मृदाएँ उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्य गंगा के मैदान के दक्षिणी छोर पर और पश्चिमी घाट के पहाड़ी पद पर पाई जाती है।

(c) इन मृदाओं का लाल रंग रवेदार आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में लौह धातु के प्रसार के कारण होता है। इनका पीला रंग इनमें जलयोजन के कारण होता है।

(iv) लेटराइट मृदा (Laterite Soil)—

(a) लेटराइट मृदा उच्च तापमान और अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में विकसित होती है।

(b) इस मृदा में ह्यूमस की मात्रा कम पाई जाती है।

(c) ये मृदाएँ मुख्य तौर पर कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश और उड़ीसा तथा असम के पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती है।

(d) यह मृदा चाय, काफी, काजू और मूँगफली की फसल के लिए उपयुक्त है।

(v) मरुस्थलीय मृदा (Arid Soil)—

(a) ये मृदाएँ आमतौर पर रेतीली और लवणीय होती हैं।

(b) इन मृदाओं में ह्यूमस और नमी की मात्रा कम होती है।

(c) ये मृदाएँ पश्चिमी राजस्थान में पाई जाती हैं।

(vi) वन मृदा (Forest Soil)—

(a) ये मृदाएँ आमतौर पर पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती हैं।

(b) नदी घाटियों में ये मृदाएँ दोमट और सिल्टदार होती हैं, परंतु ऊपरी ढालों पर इनका गठन मोटे कणों का होता है।

➢ **मृदा अपरदन (Soil Erosion)—**

(i) मानवीय क्रियाओं; जैसे—वनोन्मूलन, अति पशुचारण, निर्माण और खनन इत्यादि से मृदा अपरदन होता है।

(ii) प्राकृतिक तत्त्व; जैसे—पवन, हिमनदी और जल के द्वारा भी मृदा अपरदन होता है।

➢ **मृदा संरक्षण (Soil Conservation)—**

(a) समोच्च जुताई।

(b) पट्टी कृषि।

(c) सीढ़ीदार खेती।

(d) पेड़ों को कतारों में लगाकर रक्षक मेखला बनाना।

(e) घास की पट्टियाँ उगाकर।

इनके बारे में जाने (Know the Terms) :

- **मृदा अपरदन (Soil Erosion) :** मृदा के ऊपरी हिस्से का कटाव कई कारणों से होता है; जैसे— प्राकृतिक तत्त्व पवन, हिमनदी और जल मिट्टी को बहाते हैं जिसे मृदा अपरदन कहते हैं।
- **वाहिकाएँ (Gullies) :** बहता जल मृत्तिकायुक्त मृदाओं को काटते हुए गहरी वाहिकाएँ बनाता है जिन्हें अवनलिकाएँ कहते हैं।
- **चादर अपरदन (Sheet erosion) :** कई बार जल विस्तृत क्षेत्र को ढ़के हुए ढाल के साथ नीचे की ओर बहता है। ऐसी स्थिति में इस क्षेत्र की ऊपरी मृदा घुलकर जल के साथ बह जाती है, इसे चादर अपरदन कहा जाता है।
- **पवन अपरदन (Wind erosion) :** पवन द्वारा मैदान अथवा ढालू क्षेत्र से मृदा को उड़ा ले जाने की प्रक्रिया को पवन अपरदन कहा जाता है।
- **पट्टी कृषि (Strip Farming) :** बड़े खेतों को पट्टियों में बाँटा जाता है। फसलों के बीच में घास की पट्टियाँ उगाई जाती हैं। ये पवनों द्वारा जनित बल को कमजोर करती हैं। इस तरीके को पट्टी कृषि कहते हैं।
- **समोच्च जुताई (Contour Ploughing) :** ढाल वाली भूमि पर समोच्च रेखाओं के समानांतर हल चलाने से ढाल के साथ बहाव की गति घटती है इसे समोच्च जुताई कहा जाता है।
- **रक्षक मेखला (Shelter belt) :** पेड़ों को कतारों में लगाकर रक्षक मेखला बनाना भी पवनों की गति को कम करता है।

❑❑

अध्याय – 2 कृषि

प्रकरण (TOPIC)-I

कृषि के प्रकार, फसलों के तरीके और मुख्य फसलें
(Types of Farming, Cropping pattern and Major Crops)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- कृषि एक प्राथमिक क्रिया है, जो हमारे लिए अधिकांश खाद्यान्न उत्पन्न करती है। भारत की दो तिहाई जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न है।
- कृषि हमारे देश की प्राचीन आर्थिक क्रिया है। जीवन निर्वाह खेती से लेकर वाणिज्य खेती तक कृषि के अनेक प्रकार हैं। वर्तमान समय में भारत के विभिन्न भागों में निम्नलिखित प्रकार के कृषि तंत्र अपनाए गए हैं—
  - (i) **प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि**—प्रारंभिक जीवन निर्वाह कृषि भूमि के छोटे टुकड़ों पर आदिम कृषि औजारों जैसे लकड़ी के हल, डाओ (dao) और खुदाई करने वाली छड़ी तथा परिवार अथवा समुदाय श्रम की मदद से की जाती थी। इस प्रकार की कृषि प्राय: मानसून, मृदा की प्राकृतिक उर्वरता और फसल उगाने के लिए अन्य पर्यावरणीय परिस्थितियों की उपयुक्तता पर निर्भर करती है।
  - (ii) **गहन जीविका कृषि**—इस प्रकार की कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ भूमि पर जनसंख्या का दबाव अधिक होता है। यह श्रम गहन खेती है जहाँ अधिक उत्पादन के लिए अधिक मात्रा में जैव रासायनिक निवेशों और सिंचाई का प्रयोग किया जाता है।
  - (iii) **वाणिज्यिक कृषि**—इस प्रकार की कृषि के मुख्य लक्षण आधुनिक निवेशों जैसे अधिक पैदावार देने वाले बीजों, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग से उच्च पैदावार प्राप्त करना है। कृषि के वाणिज्यीकरण का स्तर विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग है।
- भारत में तीन शस्य ऋतुएँ-रबी, खरीफ और ज़ायद हैं।
- रबी फसलों को शीत ऋतु में अक्टूबर से दिसम्बर के मध्य बोया जाता है और ग्रीष्म ऋतु में अप्रैल से जून के मध्य काटा जाता है।
- खरीफ फसलें देश के विभिन्न क्षेत्रों में मानसून के आगमन के साथ बोई जाती हैं और सितम्बर-अक्टूबर में काट ली जाती हैं।
- रबी और खरीफ ऋतुओं के बीच ग्रीष्म ऋतु में बोई जाने वाली फसल को ज़ायद कहा जाता है।
- भारत में उगाई जाने वाली मुख्य फसलें-चावल, गेहूँ, मोटे अनाज, दालें, चाय, कॉफी, गन्ना, तिलहन, कपास और जूट आदि हैं।

- ज्वार, बाजरा और रागी भारत में उगाए जाने वाले मुख्य मोटे अनाज हैं। यद्यपि इन्हें मोटे अनाज कहा जाता है परंतु इनमें पोषक तत्वों की मात्रा अत्यधिक होती है। उदाहरणतया रागी में प्रचुर यात्रा में लोहा, कैल्शियम, सूक्ष्म पोषक और भूसी मिलती है।
- भारत विश्व में दालों का सबसे बड़ा उत्पादक तथा उपभोक्ता देश है। शाकाहारी खाने में दालें सबसे अधिक प्रोटीन दायक होती हैं।
- तुअर (अरहर), उड़द, मूंग, मसूर, मटर और चना भारत की मुख्य दलहनी फसलें हैं।
- भारत विश्व का सबसे बड़ा तिलहन उत्पादक देश है। मूँगफली, सरसों, नारियल, तिल, सोयाबीन, अरंडी, बिनौला, अलसी और सूरजमुखी भारत में उगाई जाने वाली मुख्य तिलहन फसलें हैं। इनमें से अधिकतर खाद्य हैं और खाना बनाने में प्रयोग किए जाते हैं।
  बागवानी फसलें—भारत विश्व में सबसे अधिक फलों और सब्जियों का उत्पादन करता है। भारत उष्ण और शीतोष्ण कटिबंधीय दोनों ही प्रकार के फलों का उत्पादक है।
- भारत विश्व की लगभग 13 प्रतिशत सब्जियों का उत्पादन करता है। भारत का मटर, फूलगोभी, प्याज, बंदगोभी, टमाटर, बैंगन और आलू उत्पादन में प्रमुख स्थान है।
- भारत की अखाद्य फसलों में रबड़, रेशेदार फसलें कपास व जूट आदि हैं।
- कपास, जूट, सन और प्राकृतिक रेशम भारत में उगाई जाने वाली चार प्रमुख रेशेदार फसलें हैं।
- जूट को सुनहरा रेशा कहा जाता है। इसकी उच्च लागत के कारण और कृत्रिम रेशों और पैकिंग सामग्री विशेषकर नाइलोन की कीमत कम होने के कारण, बाजार में इसकी माँग कम हो रही है।
- रेशम उत्पादन के लिए रेशम के कीड़ों का पालन 'रेशम उत्पादन' (Sericulture) कहलाता है।

इन्हें भी जानें— (Know the Terms) :

- **कृषि (Agriculture) :** बीज बोना, फसल उगाना और पशु पालना, एक विज्ञान और कला है, जिसे कृषि कहते हैं।
- **प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि (Primitive Subsistence Farming) :** कृषि भूमि के छोटे टुकड़ों पर आदिम कृषि औजारों जैसे लकड़ी के हल, डाओ (dao) और खुदाई करने वाली छड़ी तथा परिवार अथवा समुदाय श्रम की मदद से की जाती है।
- **बागवानी कृषि (Plantation Farming) :** इस प्रकार की कृषि में, विशाल क्षेत्र में एक ही फसल पैदा की जाती है।
- **वाणिज्यिक कृषि (Commercial farming) :** ऐसी कृषि जिसमें किसान ऐसी फसलों को उगाता है जिनका उद्देश्य उन्हें केवल बेचना होता है अर्थात् उत्पादन केवल बेचने के लिए किया जाता है।
- **रेशम उत्पादन (Sericulture) :** रेशम उत्पादन के लिए रेशम के कीड़ों का पालन 'रेशम उत्पादन' कहलाता है।
- **बागवानी फसलें (Horticulture) :** सब्जियाँ, फलों और फूलों की कृषि बागवानी कृषि कहलाती है।
- **झूम कृषि (Jhuming) :** किसान जमीन के टुकड़े साफ करके उन पर अपने परिवार के भरण पोषण के लिए अनाज व अन्य खाद्य फसलें उगाते हैं।
- **रबी (Rabi) :** फसलें शरद ऋतु की शुरुआत में बोई जाती हैं तथा ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत से पहले काट ली जाती हैं।
- **खरीफ (Kharif) :** मानसून के प्रारंभ के साथ बोई जाती है तथा शरद ऋतु की शुरुआत से पहले काट ली जाती है।
- **ज़ायद (Zaid) :** ये फसल रबी और खरीफ के बीच में कम समय के लिए बोई व काटी जाती हैं। इसमें सब्जियाँ, खीरा, ककड़ी आदि पैदा की जाती हैं।
- **मोटे अनाज (Millets) :** ज्वार, बाजरा और रागी को मोटे अनाज कहते हैं। इन्हें मोटे अनाज के नाम से जाना जाता है।
- **फसल चक्र (Crop Rotation) :** एक ही क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की फसलें अलग-अलग उगाये जाने तथा जमीन की उर्वरता को बनाए रखना ही फसल चक्र है।

प्रकरण (TOPIC)–2
प्रौद्योगिकीय और संस्थागत सुधार
(Technological and Institutional Reforms)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- 60 प्रतिशत से भी अधिक लोगों की आजीविका प्रदान करने वाली कृषि में कुछ गंभीर तकनीकी एवं संस्थागत सुधार लाने की आवश्यकता है। देश में संस्थागत सुधार लाने के लिए जोतों की चकबंदी, सहकारिता तथा जमींदारी आदि को समाप्त करने को प्राथमिकता दी गई।

- भोजन एक आधारभूत आवश्यकता है और देश के प्रत्येक नागरिक को ऐसा भोजन मिलना चाहिए जो न्यूनतम पोषण स्तर प्रदान करे। यदि हमारी जनसंख्या के किसी भाग को यह उपलब्ध नहीं होता है, तो वह खाद्य सुरक्षा से वंचित है।
- भारत की खाद्य सुरक्षा नीति का प्राथमिक उद्देश्य सामान्य लोगों को खरीद सकने योग्य कीमतों पर खाद्यान्नों की उपलब्धता को सुनिश्चित करना है। इससे निर्धन भोजन प्राप्त करने में समर्थ हुए हैं।
- हरित क्रांति से छोटे व सीमान्त किसानों की स्थितियों में थोड़ा सा सुधार हुआ।
- 1980 तथा 1990 के दशकों में व्यापक भूमि विकास कार्यक्रम शुरू किया गया जो संस्थागत और तकनीकी सुधारों पर आधारित था।
- संस्थागत और तकनीकी सुधारों की दिशा में उठाए गए कुछ महत्त्वपूर्ण कदमों में सूखा, बाढ़, चक्रवात, आग तथा बीमारी के लिए फसल बीमा के प्रावधान और किसानों को कम दर पर ऋण सुविधाएँ प्रदान करने के लिए ग्रामीण बैंकों, सहकारी समितियों और बैंकों की स्थापना सम्मिलित थे।
- किसानों के लाभ के लिए भारत सरकार ने "किसान क्रेडिट कार्ड" और व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना (पीएआईएस) भी शुरू की है।
- कृषि के महत्त्व को समझते हुए भारत सरकार ने इसके आधुनिकीकरण के लिए भरसक प्रयास किए हैं। भारतीय कृषि में सुधार के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना, पशु चिकित्सा सेवाएँ और पशु प्रजनन केन्द्र की स्थापना, बागवानी विकास, मौसम विज्ञान और मौसम के पूर्वानुमान के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास को वरीयता दी गई है।
- वर्तमान में भारतीय किसान को अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा से एक बड़ी चुनौती का सामना कृषि सेक्टर में विशेष रूप से करना पड़ रहा है।
- कृषि में विकास दर कम हो रही है जो कि एक चिंताजनक स्थिति है।
- रासायनिक उर्वरकों पर सहायिकी कम करने से उत्पादन लागत बढ़ रही है।
- कृषि उत्पादों पर आयकर घटाने से भी देश में कृषि पर हानिकारक प्रभाव पड़ा है।
- किसान कृषि में पूँजी निवेश कम कर रहे हैं, जिसके कारण कृषि में रोजगार घट रहे हैं।
- समाज के सभी वर्गों को खाद्य उपलब्धता सुनिश्चित कराने के लिए हमारी सरकार ने सावधानीपूर्वक राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा प्रणाली की रचना की है। इसके दो घटक हैं : (क) बफर स्टॉक, (ख) सार्वजानिक वितरण प्रणाली (पी.डी.एस.)।
- भारतीय खाद्य निगम (एफ. सी. आई.) सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्यों पर किसानों से खाद्यान्न प्राप्त करती है।
- ऊँचा न्यूनतम समर्थन मूल्य, निवेशों में सहायिकी और एफ. सी. आई द्वारा शर्तिया खरीद ने शस्य प्रारूप को बिगाड़ दिया है, जो न्यनूतम समर्थन मूल्य उन्हें मिलता है उसके लिए गेहूँ और चावल की अधिक फसलें उगाई जा रही हैं। पंजाब और हरियाणा इसके अग्रणी उदाहरण हैं।
- धीरे-धीरे खाद्य फसलों की कृषि का स्थान फलों, सब्जियों, तिलहनों और औद्योगिक फसलों की कृषि लेती जा रही है।
- वैश्वीकरण के तहत भारतीय किसानों को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
- हरित क्रांति के दौरान रसायनों के अधिक प्रयोग, जलभूतों के सूखने और जैव विविधता विलुप्त होने के कारण भूमि का निम्नीकरण हुआ है। आज 'जीन क्रांति' संकेत शब्द है, जिसमें जननिक इंजीनियारिंग शामिल है।
- आज कार्बनिक (Organic) कृषि का अधिक प्रचलन है क्योंकि यह उर्वरकों तथा कीटनाशकों जैसे कारखानों में निर्मित रसायनों के बिना की जाती है।
- भारतीय किसानों को शस्यावर्तन करना चाहिए और खाद्यान्नों के स्थान पर कीमती फसलें उगानी चाहिए। इससे आमदनी अधिक होगी और इसके साथ पर्यावरण निम्नीकरण में कमी आएगी।

इन्हें भी जानें (Know the Terms) :

- **सिंचाई (Irrigation) :** खड़ी फसल में कृत्रिम रूप से पानी बरसाने (डालने) को सिंचाई के नाम से जाना जाता है।
- **आई.सी.ए.आर. (ICAR) :** भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद।
- **एफ.सी.आई. (FCI) :** भारतीय खाद्य निगम।
- **कार्बनिक कृषि (Organic Farming) :** ऐसी कृषि जो उर्वरकों तथा कीटनाशकों जैसे कारखानों में निर्मित रसायनों के बिना की जाती है।
- **न्यूनतम समर्थन मूल्य (Minimum Support Price) :** फसल का एक कम से कम निश्चित मूल्य फसल की पैदावार से पहले सरकार फसल का निश्चित मूल्य घोषित करती है।
- **किसान क्रेडिट कार्ड (Kisan Credit Card) :** यह एक क्रेडिट कार्ड है जो भारत में किसानों को लाभ दिलाने के लिए उपलब्ध कराया जाता है।

❑❑

इकाई – III : लोकतांत्रिक राजनीति–2

अध्याय – 1 सत्ता की साझेदारी

प्रकरण (TOPIC)-1

बेल्जियम और श्रीलंका और श्रीलंका में बहुसंख्यकवाद

(Belgium and Sri Lanka and Majoritarianism in Sri Lanka)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- बेल्जियम यूरोप का एक छोटा सा देश है। ब्रूसेल्स इस देश की राजधानी है।
- इस छोटे से देश के समाज की जातीय बुनावट बहुत जटिल है।
- बेल्जियम में लोग मुख्यत: तीन भाषाएँ बोलते हैं—डच (59 प्रतिशत), फ्रेंच (40 प्रतिशत) और जर्मन (1 प्रतिशत)।
- श्रीलंका एक द्वीपीय देश है। श्रीलंका में कई जातीय समूह के लोग हैं।
- श्रीलंका 74 प्रतिशत सिंहली तथा 18 प्रतिशत लोग तमिल भाषा बोलते हैं।
- श्रीलंका में चार धर्म हैं—
  (i) बौद्ध, (ii) इस्लाम, (iii) हिन्दू, (iv) क्रिश्चियन।
- सन् 1956 में श्रीलंका में एक कानून बनाया गया जिसके तहत तमिल को दरकिनार करके सिंहली को एकमात्र राजभाषा घोषित कर दिया गया।
- सिंहली समुदाय के नेताओं ने अपनी बहुसंख्या के बल पर शासन पर प्रभुत्व जमाना चाहा। इस वजह से लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार ने सिंहली समुदाय की प्रभुता कायम करने के लिए अपनी बहुसंख्यक परस्ती के तहत कई कदम उठाए गए।
- यह बहुसंख्यकवाद का अनुसरण था।
- 1980 के दशक तक उत्तर-पूर्वी श्रीलंका में स्वतंत्र तमिल ईलम (सरकार) बनाने की माँग को लेकर अनेक राजनीतिक संगठन बने।
- श्रीलंका में दो समुदायों के बीच पारस्परिक अविश्वास ने बड़े टकराव का रूप ले लिया।

इसके बारे में जानें (Know About it) :

- **लोकतंत्र (Democracy) :** सरकार का एक स्वरूप जिसका अर्थ है "लोगों द्वारा शासन"।
- **बहुसंख्यकवाद (Majoritarianism) :** यह मान्यता है कि अगर कोई समुदाय बहुसंख्यक है तो वह अपने मनचाहे ढंग से देश का शासन कर सकता है और इसके लिए वह अल्पसंख्यक समुदाय की जरूरत या इच्छाओं की अवहेलना कर सकता है।
- **विधानमंडल (विधायिका) (Legislature) :** एक विचार विमर्श का सदन जो कानून बनाने, संशोधन करने और उन्हें रदद् करने का काम करता है।
- **संघीय सरकार (Federal Government) :** पूरे देश के लिए बनने वाली एक सामान्य सरकार को संघीय या केन्द्रीय सरकार कहा जाता है।
- **सामुदायिक सरकार (Community Government) :** यहाँ सत्ता विभिन्न सामाजिक समूहों मसलन भाषायी और धार्मिक समूहों के बीच हो सकती है। इसे सामुदायिक सरकार कहते हैं।
- **गृहयुद्ध (Civil war) :** किसी देश में सरकार विरोधी समूहों की हिंसक लड़ाई ऐसा रूप ले ले कि वह युद्ध सा लगे तो उसे गृहयुद्ध कहते हैं।
- **जातीय (Ethnic) :** ऐसा सामाजिक विभाजन जिसमें हर समूह अपनी-अपनी संस्कृति को अलग मानता है यानी यह साझी संस्कृति पर आधारित सामाजिक विभाजन है।
- **भारतीय तमिल (Indian Tamil) :** भारतीय तमिल जो औपनिवेशिक शासनकाल में बागानों में काम करने के लिए भारत से लाए गए लोगों की संतान हैं।

- **श्रीलंकाई तमिल (Sri Lankan Tamil) :** मूलरूप से श्रीलंका के निवासी 'श्रीलंकाई' तमिल कहलाते हैं।

प्रकरण (TOPIC)–2

बेल्जियम में सत्ता की साझेदारी के रूप

(Accommodation in Belgium of Power Sharing)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- एक कूटनीति जिसमें समाज के प्रमुख हिस्सों को देश की सत्ता में स्थाई रूप से हिस्सेदारी प्रदान की जाए उसे सत्ता की साझेदारी कहते हैं।
- राजनीतिक समानता इसमें अन्तर्निहित हो कि सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त होंगे तथा सभी के लिए कार्यालयों और अधिकारियों के पास पहुँचने का एक समान रास्ता होगा।
- सरकार एक संस्थान है जो राज्य की इच्छाओं को पैदा करती है, उन्हें बनाती है तथा उन्हें लागू करती है।
- सरकार के तीन प्रमुख अंग हैं—**(i)** विधायिका, **(ii)** कार्यपालिका, **(iii)** न्यायपालिका।
- सत्ता की साझेदारी के विभाजन के दो प्रमुख कारण **(i)** युक्तिपरक और **(ii)** नैतिक तर्क हैं।
- जातीयता मानवीय जनसंख्या का लक्षण है जिसके सदस्य एक-दूसरे की पहचान का सामान्य आधार सांस्कृतिक, व्यावहारिक, भाषायी और धार्मिक विशेषताएँ हैं।
- सरकार सत्ता का बँटवारा विभिन्न सामाजिक समूहों मसलन भाषायी और धार्मिक समूहों के बीच कर सकती है।
- बेल्जियम के नेताओं ने एक ऐसी व्यवस्था पर काम किया जो सभी को सक्षम बनाने तथा देश में एक-दूसरे के रहने के लिए एक बहुत ही अभिनव कार्य था।
- बेल्जियम के संविधान में इस बात का स्पष्ट प्रावधान है कि केन्द्रीय सरकार में डच और फ्रेंच भाषी मंत्रियों की संख्या समान रहेगी।
- राज्य सरकारें केन्द्र सरकार के अधीन नहीं होंगी।
- ब्रूसेल्स में अलग सरकार है और इसमें दोनों समुदायों का समान प्रतिनिधित्व है।
- केन्द्रीय और राज्य सरकारों के अलावा यहाँ एक तीसरे स्तर की सरकार भी काम करती है यानी कि "सामुदायिक सरकार"।
- सत्ता की साझेदारी वांछनीय है क्योंकि—
  - **(i)** इसकी सहायता से सामाजिक समूहों के बीच विरोध को कम करने की संभावनाएँ हैं।
  - **(ii)** यह लोकतंत्र के लिए बहुत ही पवित्र है।
- आधुनिक लोकतंत्र में सत्ता की साझेदारी की व्यवस्था के अनेक स्वरूप हो सकते हैं—
  - **(i)** सत्ता सरकार के विभिन्न घटकों में बँटी होती है; जैसे—विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका।
  - **(ii)** सरकार के बीच भी विभिन्न स्तरों पर सत्ता का बँटवारा हो सकता है; जैसे—पूरे देश के लिए सामान्य सरकार हो और फिर प्रांत या क्षेत्रीय स्तर पर अलग-अलग सरकारें रहें।
  - **(iii)** सत्ता का बँटवारा विभिन्न सामाजिक समूहों मसलन भाषायी और धार्मिक समूहों के बीच भी हो सकता है।
  - **(iv)** सत्ता के बँटवारे का एक रूप राजनीतिक दलों विभिन्न प्रकार के दबाव समूहों और आंदोलनों में भी दिखाई देता है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms) :

- **सत्ता की साझेदारी (Power Sharing) :** सरकार के विभिन्न स्तरों पर सत्ता का बँटवारा, विभिन्न संगठनों अथवा विभिन्न समुदायों जिनसे यह सुनिश्चित हो कि सरकार आसानी से चले तथा सरकार की सारी शक्तियाँ किसी एक हाथ में न रहें।
- **चातुर्यपूर्ण (Prudential) :** बुद्धिमानी पर आधारित अथवा इस बात की गणना करना कि क्या खोया क्या पाया। बुद्धिमानी पूर्ण निर्णयों में अकसर अन्तर होता है उन निर्णयों की तुलना में जो केवल नैतिक आधार पर सोच-विचार कर लिए गए हैं।

- **जाँच पड़ताल एवं संतुलन (Check and Balances) :** एक तरीका जिसके अंतर्गत सरकार के प्रत्येक अंग की जाँच पड़ताल हो, जिससे सत्ता की साझेदारी का सभी संस्थाओं के बीच संतुलन बना रहे।
- **गठ बंधन सरकार (Coalition Government) :** ऐसी सरकार जिसका गठन दो या दो से अधिक राजनीतिक दलों के गठबंधन से होता है।
- **दबाव समूह (Pressure groups) :** दबाव समूह वे संगठन हैं जो सरकार की नीतियों के प्रभावों का विरोध करते हैं जिनसे उनके व्यक्तिगत लाभ प्रभावित होते हैं।
- **वैधानिक सरकार (Legitimate Government) :** वैधानिक सरकार वह है जिसमें, नागरिकों की भागीदारी से सत्ता प्राप्त की गई है, जो एक तरीके के साथ चलती है।
- **सत्ता का क्षैतिज बँटवारा (Horizontal Division of Power) :** शासन के विभिन्न अंग; जैसे—विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच सत्ता का बँटवारा रहता है।
- **सत्ता का सीधा या लम्बवत् बँटवारा (Vertical Division of Power) :** निम्न और उच्च स्तर के बीच सत्ता का बँटवारा जैसे केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों के बीच सत्ता का विभाजन।

❑❑

अध्याय – 2 संघवाद

प्रकरण (TOPIC) -I

संघवाद क्या है? भारत संघीय देश कैसे बना?

(What is Federalism ? What makes India a Federal Country ?)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- सत्ता का बँटवारा केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, क्षेत्रीय सरकार और स्थानीय सरकारों के बीच होता है जिसे संघवाद के नाम से जाना जाता है।
- संघीय शासन व्यवस्था में सर्वोच्च सत्ता केन्द्रीय प्राधिकार और उसकी विभिन्न आनुषंगिक इकाइयों के बीच बँट जाती है।
- संघीय व्यवस्था की विशेषताएँ हैं—
  (i) यहाँ सरकार दो या अधिक (त्रिस्तरीय) वाली होती है।
  (ii) अलग-अलग स्तर की सरकारें एक ही नागरिक समूह पर शासन करती हैं पर कानून बनाने, कर वसूलने और प्रशासन का उनका अपना–अपना अधिकार क्षेत्र होता है।
  (iii) विभिन्न स्तरों की सरकारों के अधिकार–क्षेत्र संविधान में स्पष्ट रूप से वर्णित हैं। इसलिए संविधान सरकार के हर स्तर के अस्तित्व और प्राधिकार की गारंटी और सुरक्षा देता है।
  (iv) संविधान के मौलिक प्रावधानों को किसी एक स्तर की सरकार अकेले नहीं बदल सकती। ऐसे बदलाव दोनों स्तर की सरकारों की सहमति से ही हो सकते हैं।
  (v) अदालतों को संविधान और विभिन्न स्तर की सरकारों के अधिकार की व्याख्या करने का अधिकार है। विभिन्न स्तर की सरकारों के बीच अधिकारों के विवाद की स्थिति में सर्वोच्च न्यायालय निर्णायक की भूमिका निभाता है।
  (vi) वित्तीय स्वायत्तता निश्चित करने के लिए विभिन्न स्तर की सरकारों के लिए राजस्व के अलग-अलग स्रोत निर्धारित हैं।
  (vii) इस प्रकार संघीय शासन व्यवस्था के दोहरे उद्देश्य हैं—देश की एकता की सुरक्षा करना और उसे बढ़ावा देना तथा इसके साथ ही क्षेत्रीय विविधताओं का पूरा सम्मान करना।
- अर्जेंटीना, आस्ट्रिया, ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम, ब्राजील, कनाडा, जर्मनी, भारत, मैक्सिको, स्विट्जरलैंड और यूनाइटेड स्टेट्स में संघीय सरकारें हैं।

- संविधान में स्पष्ट रूप से केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच विधायी अधिकारों को तीन हिस्से में बाँटा गया है। ये तीन सूचियाँ इस प्रकार हैं–

  (i) संघ सूची में प्रतिरक्षा, विदेशी मामले, बैंकिग, संचार और मुद्रा जैसे राष्ट्रीय महत्त्व के विषय हैं। पूरे देश के लिए इन मामलों में एक तरह की नीतियों की जरूरत है। इसी कारण इन विषयों को संघ सूची में डाला गया है। संघ सूची में वर्णित विषयों के बारे में कानून का अधिकार सिर्फ केन्द्र सरकार को है।

  (ii) राज्य सूची में पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि और सिंचाई जैसे प्रांतीय और स्थानीय महत्त्व के विषय हैं। राज्य सूची में वर्णित विषयों के बारे में सिर्फ राज्य सरकार ही कानून बना सकती है।

  (iii) समवर्ती सूची में शिक्षा, वन, मजदूर, संघ, विवाह, गोद लेना और उत्तराधिकार जैसे वे विषय हैं जो केन्द्र के साथ राज्य सरकारों की साझी दिलचस्पी में आते हैं। इन विषयों पर कानून बनाने का अधिकार राज्य सरकारों और केन्द्र सरकार, दोनों को ही है लेकिन जब दोनों के कानूनों में टकराव हो तो केन्द्र सरकार द्वारा बनाया गया कानून ही मान्य होता है।

- भारतीय संघ की इकाइयों को बहुत ही कम अधिकार हैं। ये वैसे छोटे इलाके हैं जो अपने आकार के चलते स्वतंत्र प्रांत नहीं बन सकते। इन्हें किसी मौजूदा प्रांत में विलीन करना भी संभव नहीं है। ऐसे क्षेत्रों को केन्द्र शासित प्रदेश कहा जाता है।

इनके बारे में जाने (Know the Terms)

- **संघवाद (Federalism) :** संघीय शासन व्यवस्था में सर्वोच्च सत्ता केंद्रीय प्राधिकार और उसकी विभिन्न आनुषांगिक इकाइयों के बीच बँट जाती है।
- **न्याय करने का अधिकार (Jurisdiction) :** ऐसा दायरा जिस पर किसी का वैधानिक अधिकार हो।
- **संघ सूची (Union List) :** संघ सूची में प्रतिरक्षा, विदेशी मामले, बैंकिंग, संचार और मुद्रा जैसे राष्ट्रीय महत्व के विषय हैं। संघ सूची में वर्णित विषयों के बारे में कानून बनाने का अधिकार सिर्फ केन्द्र सरकार को है।
- **राज्य सूची (State List) :** राज्य सूची में पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि जैसे प्रांतीय और स्थानीय महत्व के विषय हैं। राज्य सूची में वर्णित विषयों के बारे में सिर्फ राज्य सरकार ही कानून बना सकती है।
- **समवर्ती सूची (Concurrent List) :** समवर्ती सूची में शिक्षा, वन, मजदूर संघ, गोद लेना और उत्तराधिकार जैसे वे विषय हैं जो केन्द्र के साथ राज्य सरकारों की साझी दिलचस्पी में आते हैं।
- **साथ आकर संघ बनाना (Coming together Federation) :** साथ आकर संघ बनाने के उदाहरण हैं– संयुक्त राज्य अमरीका, स्विट्जरलैंड और ऑस्ट्रेलिया आदि। इस तरह की संघीय व्यवस्था वाले मुल्कों में आमतौर पर प्रांतों को समान अधिकार होता है और वे केन्द्र के बजाय ज्यादा ताकतवर होते हैं।
- **राज्य गठन संघ (Holding together Federation) :** बड़े देश द्वारा अपनी आतंरिक विविधता को ध्यान में रखते हुए राज्यों का गठन करना और फिर राज्य और राष्ट्रीय सरकार के बीच सत्ता का बँटवारा कर देना। भारत, बेल्जियम और स्पेन इसके उदाहरण हैं।
- **बाकी बचे विषय (Residuary Subjects) :** कुछ विषय ऐसे हैं जो इनमें से किसी सूची में नहीं आते हैं। कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर जैसे नए विषय जो कि संविधान बनने के बाद आए हैं। संविधान के अनुसार बाकी बने विषय केन्द्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में चले जाते हैं।
- **भाषा नीति (Language Policy) :** यह अन्य भाषाओं के लिए सुरक्षागार्ड है। भाषा नीति के अंतर्गत संविधान में हिन्दी के अलावा 21 भाषाओं को अनुसूचित भाषा का दर्जा दिया गया है।
- **परिगणित भाषाएँ (Scheduled Languages) :** भारतीय संविधान में अंग्रेज़ी सहित 22 भाषाओं को परिगणित (सूचीबद्ध) किया गया है जिनसे सरकारी काम-काज किया जाएगा।
- **भारतीय संघवाद (Indian Federation) :** भारत में 29 राज्य और 7 केन्द्रशासित प्रदेश हैं। भारत की राजधानी दिल्ली है।
- **केन्द्रशासित प्रदेश (Union Territories) :** केन्द्र शासित क्षेत्रों को राज्यों वाले अधिकार नहीं हैं। इन इलाकों का शासन चलाने का विशेष अधिकार केन्द्र सरकार को प्राप्त है। इन क्षेत्रों में चंडीगढ़, लक्षद्वीप व दिल्ली आदि आते हैं।
- **क्षेत्रवाद (Regionalism) :** किसी विशेष के विषय में सोचना गर्व करना या निष्ठा रखना इस इच्छा के साथ कि उस क्षेत्र पर उनका स्वयं का ही शासन रहे।

प्रकरण (TOPIC)–2
भारत में संघीय व्यवस्था का विकेन्द्रीकरण कैसे हुआ ?

(How is Federalism practiced Decentralisation in India ?)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- भाषा के आधार पर प्रांतों का गठन हमारे देश की लोकतांत्रिक राजनीति के लिए पहली और कठिन परीक्षा थी।
- हिन्दी को राजभाषा माना गया लेकिन संविधान में हिन्दी के अलावा 21 भाषाओं को अनुसूचित भाषा का दर्जा दिया गया।
- नागालैंड, उत्तराखण्ड और झारखण्ड जैसे राज्यों का गठन भाषा के आधार पर नहीं बल्कि संस्कृति, भूगोल और जातीयताओं की विभिन्नताओं के आधार पर किया गया है।
- केन्द्र-राज्य संबंधों में लगातार आए बदलाव का यह उदाहरण बताता है कि व्यवहार में संघवाद किस तरह मजबूत हुआ है।
- जब किसी एक दल को लोकसभा में स्पष्ट बहुमत नहीं मिला तब प्रमुख राष्ट्रीय पार्टियों को क्षेत्रीय दलों समेत अनेक पार्टियों का गठबंधन बनाकर "गठबंधन सरकार" बनानी पड़ी।
- वास्तविक विकेन्द्रीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम 1992 में उठाया गया।
- संविधान में संशोधन करके लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के इस तीसरे स्तर को ज्यादा शक्तिशाली और प्रभावी बनाया गया।

  (i) अब स्थानीय स्वशासी निकायों के चुनाव नियमित रूप से कराना संवैधानिक बाध्यता है।

  (ii) निर्वाचित स्वशासी निकायों के सदस्य तथा पदाधिकारियों के पदों में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और पिछड़ी जातियों के लिए सीटें आरक्षित हैं।

  (iii) कम से कम एक तिहाई पद महिलाओं के लिए आरक्षित हैं।

  (iv) हर राज्य में पंचायत और नगरपालिका चुनाव कराने के लिए राज्य चुनाव आयोग नामक स्वतंत्र संस्था का गठन किया गया है।

  (v) राज्य सरकारों को अपने राजस्व और अधिकारों का कुछ हिस्सा इन स्थानीय स्वशासी निकायों को देना पड़ता है। सत्ता में भागीदारी की प्रकृति हर राज्य में अलग-अलग है।
- गाँवों के स्तर पर मौजूद स्थानीय शासन व्यवस्था को पंचायती राज के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक गाँव में (और कुछ राज्यों में ग्राम समूह की) एक ग्राम पंचायत होती है।
- **ग्राम पंचायत के कार्य—**

  (i) यह पूरे पंचायत के लिए फैसला लेने वाली संस्था है।

  (ii) पंचायतों का काम ग्राम-सभा की देखरेख में चलता है। गाँव के सभी मतदाता इसके सदस्य होते हैं।

  (iii) ग्राम पंचायत का बजट पास करने और इसके कामकाज की समीक्षा के लिए साल में कम से कम दो या तीन बार बैठक करनी होती है।
- कई ग्राम पंचायतों को मिलाकर पंचायत समिति का गठन होता है। इसे मंडल या प्रखंड स्तरीय पंचायत भी कहा जाता है।
- किसी जिले की सभी पंचायत समितियों को मिलाकर जिला परिषद का गठन होता है।
- जिला परिषद का प्रमुख इस परिषद का राजनीतिक प्रधान होता है।
- शहरों में नगरपालिका होती है। बड़े शहरों में नगर निगम का गठन होता है।
- नगरपालिका और नगर निगम, दोनों का कामकाज निर्वाचित प्रतिनिधि करते हैं।
- नगरपालिका प्रमुख नगर पालिका के राजनैतिक प्रधान होते हैं। नगर निगम के ऐसे पदाधिकारी को मेयर कहते हैं।

इनके बारे में जानें (Know the Terms) :

- **स्वशासन (Autonomy) :** एक क्षेत्र अथवा भूभाग जो अपने आप स्वतंत्र रूप से शासन करते हैं।
- **भाषायी राज्य (Linguistic States) :** भारत एक बहुभाषीय देश है यहाँ लोग विभिन्न भाषाएँ बोलते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात, कुछ राज्यों का गठन लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा के आधार पर किया गया था। ये सभी भाषायी राज्य के नाम से जाने जाते हैं।

- **राज्य चुनाव आयोग (State Election Commission) :** यह संस्था प्रत्येक राज्य में होती है इसका कार्य पंचायत और नगरपालिका के चुनाव कराना है।
- **पंचायती राज (Panchayati Raj) :** शासन की एक व्यवस्था जिसमें ग्राम पंचायत प्रशासन की एक बुनियादी इकाई है। इसके तीन स्तर—ग्राम, खण्ड, जिला हैं।
- **पंचायत समिति (Panchayati Samiti) :** यह भारत में स्थानीय शासन संस्था है जो तहसील और खण्ड (Block) स्तर पर होती है, जिनका सम्बन्ध ग्राम पंचायत और जिला परिषद से होता है।
- **ग्राम सभा (Gram Sabha) :** वो संस्था जो ग्राम पंचायतों का निरीक्षण करती है।
- **त्रिस्तरीय व्यवस्था (Tier System) :** वह व्यवस्था है जो सरकार के स्तर के महत्व को बताती है। यह द्विस्तरीय व त्रिस्तरीय हो सकती है।
- **महापौर (Mayor) :** नगर महापालिका (नगर निगम) का अध्यक्ष महापौर के नाम से जाना जाता है।

❑❑

इकाई–IV आर्थिक विकास की समझ

अध्याय – 1 विकास

प्रकरण (TOPIC)-1
राष्ट्रीय विकास
(National Development)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- विकास को प्रगति के रूप में भी जाना जाता है। यह विचार हमारे साथ सदैव रहता है।
- हर व्यक्ति अलग-अलग चीजें पाना चाहता है। वे ऐसी चाहते हैं जो उनके लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हों अर्थात् वे चीजें जो उनकी आकांक्षाओं और इच्छाओं को पूरा कर सकें।
- लोग चाहते हैं कि उन्हें नियमित काम, बेहतर मजदूरी और अपनी उपज तथा उत्पादों के लिए अच्छी कीमतें मिलें। दूसरे शब्दों में वे ज्यादा आय चाहते हैं।
- किसी भी तरह से ज्यादा आय चाहने के अतिरिक्त, लोग बराबरी का व्यवहार, स्वतंत्रता, सुरक्षा और दूसरों से आदर मिलने की इच्छा भी रखते हैं।
- अलग-अलग लोगों के लिए विकास के अलग-अलग लक्ष्य होते हैं। जैसे– एक शहरी बेरोजगार युवा अपने लिए अच्छे वेतन की नौकरी, पदोन्नति आदि दूसरी ओर गाँव का बेरोजगार व्यक्ति अपने लिए गाँव में ही रोजगार के अवसर चाहता है। श्रमिकी नौकरी की सुरक्षा ही उसकी गरिमा है।
- आय विकास का एक महत्त्वपूर्ण अंश है।
- देशों की तुलना करने के लिए उनकी आय और प्रति व्यक्ति आय सबसे महत्त्वपूर्ण विशिष्टता समझी जाती है।
- लोगों के लक्ष्य भिन्न-भिन्न हैं, तो उनकी राष्ट्रीय विकास के बारे में धारणा भी भिन्न होगी।
- विश्व बैंक ने विकास के लिए प्रति व्यक्ति आय को सूचक माना है।
- विकास के सूचक के रूप में यू.एन.डी.पी. स्वास्थ्य, शिक्षा के स्तर और नागारिकों की प्रति व्यक्ति आय पर विचार करती है।
- विश्व बैंक के अनुसार सन् 2016 में जिन देशों में प्रति व्यक्ति आय 12,236 अमेरिकी डालर प्रतिवर्ष है वे धनवान देश हैं तथा जिन देशों में प्रति व्यक्ति आय 1005 अमेरिकी डालर प्रतिवर्ष या उससे कम है वे निम्न-आय वाले देश हैं।
- भारत मध्य आय वर्ग के देशों में आता है क्योंकि सन् 2016 में प्रति व्यक्ति आय 1840 अमेरिकी डालर प्रतिवर्ष थी।
- दो राज्यों अथवा दो देशों की तुलना करने का एक और तरीका है, उनकी शिशु मृत्यु दर, साक्षरता दर, निवल उपस्थिति अनुपात, मानव विकास सूचकांक, उपलब्ध सुविधाएँ आदि।

- केरल में शिशु मृत्यु दर कम और साक्षरता दर अधिक है क्योंकि केरल ने स्वास्थ्य की देखभाल और शिक्षा की सुविधाओं को बराबर रखा है।
- यह आवश्यक नहीं कि जेब में रखा रुपया वे वस्तुएँ और सेवाएँ खरीद सके जिनकी आपको जरूरत है। जैसे रुपया प्रदूषण मुक्त वातावरण नहीं खरीद सकता।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **विकास (Development) :** विकास का अर्थ है अधिक आय तथा और अधिक आय के लिए वे नियमित काम, बेहतर मजदूरी और अपनी उपज तथा उत्पादों के लिए अच्छी कीमतें मिलें।
- **राष्ट्रीय विकास (National Development) :** राष्ट्रीय विकास का अर्थ है प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि और अपनी स्वयं की सामर्थ्य से अर्थव्यवस्था को बढ़ाना।
- **संपोषणीय आर्थिक विकास (Sustainable Economic Development) :** संपोषणीय आर्थिक विकास वह प्रक्रिया है जो आर्थिक विकास में इस उद्देश्य का ध्यान रखती है कि प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण को किसी प्रकार की हानि पहुँचाए बिना वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों दोनों के जीवन में गुणवत्ता बनी रहे।
- **आर्थिक क्रियाएँ (Economic Activities) :** वे क्रियाएँ जो करने पर वापसी में आमदनी प्रदान करती हैं अथवा साधारण शब्दों में वे क्रियाएँ जिनका संबंध धन से है।
- **अनार्थिक क्रियाएँ (Non-economic Activities) :** वे क्रियाएँ जिनका संबंध धन से नहीं होता है अथवा जिनसे वापसी में कोई आमदनी नहीं होती है।
- **आर्थिक विकास (Economic Development) :** एक प्रक्रिया जिसके अंतर्गत देश के लिए राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय होती है और इसके साथ ही जो लोग गरीबी का जीवन जी रहे हैं उसमें कमी आती है, रोजगार के बहुत सारे अवसर पैदा होते हैं तथा समाज के गरीब तबके के लोगों के जीवन–स्तर में वृद्धि होती है यह "आर्थिक विकास" के रूप में जाना जाता है।
- **राष्ट्रीय आय (National Income) :** यह उन सभी वस्तुओं और सेवाओं का योग है जो एक देश के लिए एक निश्चित समय के लिए उपलब्ध है जिनसे कुल आय का स्रोत है जिसमें बाहरी (विदेशी) आय भी है।
- **प्रति व्यक्ति आय (Per Capita Income) :** किसी देश की औसत आय को प्रति व्यक्ति आय कहा जाता है।
- **विकासशील देश (Developing countries) :** वे देश जिनकी आय जीवन स्तर के एक निश्चित मानदंड से कम है उन्हें "विकासशील देश" कहा जाता है।
- **अविकसित देश (Underdeveloped Country) :** वह देश जिसकी आय ऊँची नहीं है तथा रहने का जीवन–स्तर भी निम्न है उसे अविकसित देश के रूप में जाना जाता है।
- **अर्थव्यवस्था (Economy) :** आर्थिक ढाँचा जो किसी देश के आर्थिक जीवन व वहाँ के लोगों के जीवन–स्तर के बारे में वर्णन करने में सहायता करता है।

प्रकरण (TOPIC)–2
सार्वजनिक सुविधाएँ (Public Facilities)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- सार्वजनिक सुविधाएँ वे सुविधाएँ होती हैं जो सरकार द्वारा आम लोगों को उपलब्ध कराई जाती हैं।
- सार्वजनिक सेवाओं और सुविधाओं के प्रावधान का शहरी परिवेश में जीवन की गुणवत्ता उनके निवास तथा अन्य का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
- सेवाओं– व्यवहार्य, संपोषणीय, स्वस्थ और सशक्त, समुदाय, विभेद और पराक्रम जैसी उपलब्धियों को पैदा करने में सार्वजनिक सुविधाएँ एक आवश्यक भूमिका का निर्वहन करती हैं।
- अकेला धन वे सब वस्तुएँ और सेवाएँ नहीं खरीद सकता जो एक बेहतर जीवन के लिए आवश्यक हो सकती हैं।
- आमदनी स्वयं में पूर्णरूप से पर्याप्त सूचक नहीं है, जो नागरिकों के लिए वस्तुएँ और सेवाएँ उपलब्ध करा सके।

- सरकार आवश्यक सुविधाएँ जैसे स्वास्थ्य देखरेख, सफाई व्यवस्था, विद्युत, सार्वजनिक वाहन और शिक्षण संस्थाएँ उपलब्ध कराती है।
- केरल में शिशु मृत्यु दर कम है क्योंकि वहाँ स्वास्थ और शिक्षा की बुनियादी सुविधाओं की पर्याप्त व्यवस्था उपलब्ध है।
- कुछ राज्यों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पी.डी.एस.) की व्यवस्था ठीक है अगर कुछ सार्वजनिक वितरण प्रणाली की दुकानें, जैसे राशन की दुकान अगर कुछ स्थानों पर ठीक प्रकार से काम नहीं करती हैं, तो वहाँ लोगों के सामने समस्या खड़ी होगी और वे कुछ प्रतिक्रिया करेंगे। कुछ राज्यों में लोगों का स्वास्थ्य और पोषण संबंधी स्तर निश्चित रूप से बेहतर है।
- यू.एन.डी.पी. द्वारा प्रकाशित मानव विकास रिपोर्ट में देशों की तुलना लोगों के शैक्षिक स्तर, उनके स्वास्थ स्तर और प्रति व्यक्ति आय पर आधारित है।
- मानव विकास सूची (एच.डी.आई.) के माध्यम से जिसमें कि मिश्रित आंकड़ों में जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और प्रति व्यक्ति आय जैसे सूचकों का प्रयोग मानव विकास के लिए देशों को स्तर प्रदान करने में किया गया है।
- मानव विकास सूचकांक (2016) में भारत विश्व में 131वें स्थान पर है।
- विकास के लक्ष्य में अच्छी आय, समान व्यवहार, स्वतंत्रता, शिक्षा, सुरक्षा और शांति सम्मिलित है।
- लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था के माध्यम से इन विकास के लक्ष्यों को समाज के विभिन्न वर्गों में प्राप्त किया जा सकता है।
- यू.एन.डी.पी. द्वारा प्रकाशित मानव विकास सूचकांक में देश के विकास के स्तर को इंगित किया गया है, इसके लिए अभी कितना और चलना है और अभी वह कितना दूर है, उच्च स्तर तक पहुँचने में, जिसके लिए लोगों की प्रति व्यक्ति आय, जिसके कल्याणकारी भाग जैसे जीवन प्रत्याशा, साक्षरता, लोगों का शैक्षिक स्तर और स्वास्थ्य स्तर आदि आवश्यक अंग हैं।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **शिशु मृत्यु दर (Infant Mortality Rate) :** किसी वर्ष में पैदा हुए 1000 जीवित बच्चों में से एक वर्ष की आयु से पहले मर जाने वाले बच्चों का अनुपात दिखाती है।
- **साक्षरता दर (Literacy Rate) :** 7 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों में साक्षर जनसंख्या का अनुपात।
- **निबल उपस्थिति अनुपात :** 6-10 वर्ष की आयु के स्कूल जाने वाले कुल बच्चों का उस आयु वर्ग के कुल बच्चों के साथ प्रतिशत।
- **शरीर द्रव्यमान सूचकांक** = $\frac{\text{वजन किग्रा में}}{(\text{ऊँचाई मीटर में})^2}$
- **मानव विकास सूचकांक (Human Development Index) :** ये जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और प्रति व्यक्ति आय के मिले-जुले आँकड़े हैं जिनका प्रयोग देशों को मानव विकास की चार स्तरीय श्रेणी देने में किया जाता है।

प्रकरण (TOPIC)–3
विकास की धारणीयता (संपोषणीयता)
(Sustainability of Development)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- संपोषणीय आर्थिक विकास का अर्थ है विकास अपना स्थान पर्यावरण को क्षति पहुँचाए बिना प्राप्त करेगा तथा वर्तमान विकास भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकता से कोई समझौता नहीं करेगा।

  संपोषणीय विकास के विभिन्न मापदण्ड हैं—

  (i) अत्यधिक प्रयोग पर नियंत्रण तथा संपोषणीय विकास के लिए अभिज्ञता पैदा करके उपलब्ध कराना।

  (ii) नवीकरणीय संसाधनों के प्रयोग में वृद्धि।

  (iii) जीवाश्म ईंधन का कम प्रयोग।

  (iv) कार्बनिक कृषि की शुरुआत।

  (v) विश्वव्यापी तापक्रम वृद्धि को कम करने के साधनों को स्वीकार करना।

- संपोषणीय विकास के लिए संसाधनों का विवेकपूर्ण प्रयोग होना चाहिए, वर्तमान में मस्तिष्क में यह होना चाहिए कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भविष्य में भी आवश्यकताएँ होंगी जैसे—भूमिगत जल।
- कृषि में भूमिगत जल का अत्यधिक प्रयोग, जल अनवीकरणीय संसाधन है हमें अनिवार्य रूप से पानी की पूर्ति में मदद करनी होगी।
- आर्थिक वृद्धि के लिए संपोषणीय विकास महत्त्वपूर्ण है क्योंकि—

(i) पर्यावरण निश्चित रूप से सुरक्षित रहेगा जब विकास अपना स्थान लेगा।

(ii) संसाधनों का प्रयोग इतना हो कि कुछ भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित बना रहे।

(iii) सभी लोगों के रहने के स्तर में वृद्धि होनी चाहिए।

- महात्मा गाँधी ने कहा था कि, "पृथ्वी पर सभी की आवश्यकता के लिए पर्याप्त मात्रा में संसाधन उपलब्ध हैं, लेकिन किसी एक व्यक्ति के लालच और संतुष्टि के लिए पर्याप्त नहीं है।
- पर्यावरण के निम्नीकरण के परिणामस्वरूप राष्ट्र या राज्य की सीमाओं का सम्मान नहीं होता।
- संपोषणीय विकास तुलनात्मक रूप से ज्ञान का एक नया क्षेत्र है जिसमें वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, चिंतक और अन्य सामाजिक वैज्ञानिक एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **संपोषणीय विकास (Sustainable Development) :** संपोषणीय विकास मानवीय आवश्यकताओं के जीवन स्तर में वृद्धि और बेहतर जीवन जीने के बीच बढ़िया संतुलन बनाता है तथा प्राकृतिक संसाधनों एवं पारिस्थितिक तंत्र को सुरक्षित रखता है जिसकी हमें आवश्यकता है, जिस पर भविष्य की पीढ़ियाँ निर्भर हैं।
- **कार्बनिक खेती (Organic Farming) :** सब्जी और पशुधन का उपयोग प्राकृतिक संसाधन के रूप में पोषक तत्त्वों (जैसे कम्पोस्ट खाद, फसल अपशिष्ट, और खाद) तथा फसल के प्राकृतिक तरीके तथा घास-पात पर नियंत्रण, अकार्बनिक कृषि रसायनों के प्रयोग के बजाय इनका प्रयोग करना चाहिए।
- **जीवाश्म ईंधन (Fossil Fuels) :** एक प्राकृतिक ईंधन जैसे कोयला और गैस, इनका निर्माण भूगर्भीय क्रिया से होता है पृथ्वी के अंदर जो क्रियाशील संघटित पदार्थ से बनते हैं।
- **वैश्विक कृषि (Global Farming) :** पृथ्वी पर चारों ओर क्रमिक रूप से बढ़ते तापमान का सम्बन्ध वातावरण से है, इससे हरित गृह (Greenhouse) प्रभावित हुए हैं जिसका कारण कार्बन डाइऑक्साइड, क्लोरोफ्लूरोकार्बन और अन्य प्रदूषक तत्त्वों का बढ़ता स्तर है।

❑❑

अध्याय – 2 : भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक

प्रकरण (TOPIC)-1
आर्थिक कार्यों के क्षेत्रक
(Sectors of Economic Activities)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- लोग विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों, वस्तु उत्पादन और सेवाओं में लगे हुए हैं।
- आर्थिक गतिविधियों को तीन क्षेत्रकों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(i) प्राथमिक क्षेत्रक

(ii) द्वितीयक क्षेत्रक

(iii) तृतीयक क्षेत्रक

- आर्थिक गतिविधियाँ, हालाँकि तीन विभिन्न श्रेणियों का एक समूह है, लेकिन एक–दूसरे पर बहुत निर्भर हैं।
- प्राथमिक क्षेत्रक में विभिन्न उत्पादन गतिविधियाँ द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक को बड़ी संख्या में वस्तुओं का उत्पादन करती हैं तथा सेवा देती हैं और बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार देती हैं।
- किसी विशेष वर्ष में प्रत्येक क्षेत्रक द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य, उस वर्ष में क्षेत्रक के कुल उत्पादन की जानकारी प्रदान करता है।
- द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक में रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध नहीं हैं।
- देश के आधे से ज्यादा श्रमिक प्राथमिक क्षेत्रक में काम कर रहे हैं, विशेषकर कृषि में।
- तीनों क्षेत्रकों के उत्पादनों के योगफल को देश का सकल घरेलू उत्पादन (जी.डी.पी) कहते हैं।
- सकल घरेलू उत्पादन (जी.डी.पी.) में कृषि का योगदान केवल एक–चौथाई (1/4) है, जबकि उत्पादन द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रक का योगदान तीन चौथाई (3/4) है।
- वर्ष 2003 में भारत में प्राथमिक क्षेत्रक को प्रतिस्थापित करते हुए तृतीयक क्षेत्रक सबसे बड़े उत्पादक क्षेत्रक के रूप में उभरा।
- निम्न कारणों के चलते भारत में तृतीयक क्षेत्रक महत्त्वपूर्ण हो गया है–

(i) प्रथम अनेक सेवाओं जैसे–अस्पताल, शैक्षिक संस्थाएँ, डाक एवं तार सेवा, थाना, कचहरी, बैंक, नगर निगम, रक्षा, बीमा आदि की जिम्मेदारी सरकार उठाती है।

(ii) द्वितीय, कृषि व उद्योग का विकास होता है।

(iii) तृतीय, जैसे-जैसे बढ़े शहरों में आय का स्तर बढ़ता है, कुछ लोग अन्य कई सेवाओं जैसे– रेस्तरां, पर्यटन, शापिंग, निजी अस्पताल, निजी विद्यालय, व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि की माँग शुरू कर देते हैं।

(iv) चतुर्थ, विगत दशकों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित कुछ नवीन सेवाएँ महत्त्वपूर्ण एवं अपरिहार्य हो गई हैं। इन सेवाओं के उत्पादन में तीव्र वृद्धि हो रही है।

- भारत में सेवा क्षेत्रक कई तरह के लोगों को नियोजित करते हैं। एक ओर, उन सेवाओं की संख्या सीमित है जिसमें अत्यंत कुशल और शिक्षित श्रमिकों को रोजगार मिलता है। दूसरी ओर, बहुत अधिक संख्या में लोग छोटी दुकानों, मरम्मत कार्यों, परिवहन जैसी सेवाओं में लगे हुए हैं।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **प्राथमिक क्षेत्रक (Primary Sector) :** इसके अंतर्गत वे सभी आर्थिक गतिविधियाँ हैं जिसमें हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन करते हैं जैसे कृषि, मत्स्य–पालन, खनन आदि।
- **द्वितीयक क्षेत्रक (Secondary Sector) :** द्वितीयक क्षेत्रक की गतिविधियों के अंतर्गत प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण प्रणाली के जरिए अन्य रूपों में परिवर्तित किया जाता है। यह प्राथमिक क्षेत्रक के बाद अगला कदम है। जैसे अयस्क का खनन प्राथमिक गतिविधि है लेकिन स्टील का उत्पादन द्वितीयक क्षेत्रक की गतिविधि है।
- **तृतीयक क्षेत्रक (Tertiary Sector) :** ये गतिविधियाँ प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रक के विकास में मदद करती हैं, जैसे बैंकिंग, परिवहन, बीमा इत्यादि।
- **अंतिम उत्पादन (Final Product) :** वे वस्तुएँ जो उपयोग के लिए तैयार हैं उन्हें अंतिम उत्पादन कहते हैं, जैसे डबल रोटी (Bread) तो उपयोग के लिए तैयार है।
- **मध्यवर्ती (Intermediate) :** मध्यवर्ती वस्तुएँ, अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के निर्माण में इस्तेमाल की जाती हैं। अंतिम वस्तुओं के मूल्य में मध्यवर्ती वस्तुओं का मूल्य पहले से ही शामिल होता है। बिस्किट (अंतिम वस्तु) के मूल्य में आटे का मूल्य पहले से ही सम्मिलित है।
- **सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product) :** यह किसी देश के भीतर किसी विशेष वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य है।

प्रकरण (TOPIC)–2

अतिरिक्त रोजगार का सृजन कैसे हो ?

(How to Create More Employment ?)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- खुली बेराजगारी या अल्प बेरोजगारी का अर्थ है अधिकतर लोग बेकार बैठे हुए हैं जिनके पास कोई रोजगार नहीं है।
- भारत जैसे देश में अतिरिक्त रोजगारों का सृजन किया जा सकता है, बाँधों से तथा नहरों द्वारा किसानों को पानी उपलब्ध कराना, किसानों को सस्ते क्रेडिट कार्ड और फसल बीमा, भण्डारण और परिवहन पर पैसा खर्च करके, तकनीकी प्रशिक्षण तथा बैंकों द्वारा सस्ती ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराके यह काम किया जा सकता है।
- योजना आयोग द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, अकेले शिक्षा क्षेत्र में लगभग 20 लाख रोजगारों का सृजन किया जा सकता है।
- हमारे देश में, केन्द्र सरकार ने अभी हाल में भारत के 625 जिलों में काम का अधिकार लागू करने के लिए एक कानून बनाया है और आगे इसे 130 जिलों में लागू किया जाएगा। इसे राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 कहते हैं।
- सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) किसी देश के भीतर किसी विशेष वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य है।
- राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गांरटी अधिनियम 2005 के मुख्य उद्देश्य–
  - (i) ग्रामीण क्षेत्र में लोगों के रोजगार के अवसर देना।
  - (ii) लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि करना।
  - (iii) कार्य के अधिकार का कार्यान्वयन करना।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) :** यह किसी देश के भीतर किसी विशेष वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य है।
- **बेरोजगारी (Unemployment) :** जब कोई व्यक्ति उचित मजदूरी पर कार्य करने की इच्छा रखता है, लेकिन जब उसे कोई रोजगार नहीं मिलता है, तब इसे बेरोजगारी कहते हैं।
- **बेरोजगारी के प्रकार (Types of Unemployment) :** (i) मौसमी बेरोजगारी, (ii) प्रच्छन्न बेरोजगारी।
- **मौसमी बेरोजगारी (Seasonal Unemployment) :** ऐसी बेरोजगारी जो किसी विशेष मौसम में पैदा होती है इसे मौसमी बेरोजगारी कहते हैं। यह मुख्यत: कृषि क्षेत्रक में दिखाई देती है।
- **प्रच्छन्न बेरोजगारी (Disguised Unemployment) :** जब किसी कार्य में आवश्यकता से अधिक लोग होते हैं, तब इसे प्रच्छन्न बेरोजगारी कहते हैं। अतएव हम कुछ लोगों को उस कार्य से हटा दें तो भी उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, इसे अल्प बेरोजगारी भी कहते हैं।
- **मनरेगा (MNREGA) :** महात्मा गाँधी राष्ट्रीय रोजगार अधिनियम 2005 यह एक वर्ष में सभी बेरोजगार जिन्हें आवश्यकता है को 100 दिन का रोजगार दिलाएगा। यदि उन्हें रोजगार नहीं मिल पाता है तो उन्हें बेरोजगारी भत्ता प्रदान किया जाएगा।

❑❑